2

मसीह, भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ (भाग 2)

(2:1-18)

मसीह, मनुष्य का उद्धारकर्त्ता, स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ (2:1-18)

लापरवाही के विरुद्ध चेतावनी (2:1-4)

[1] इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहकर उनसे दूर चले जाएं। [2] क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था, जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला। [3] तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहिले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। [4] और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

यह भाग इब्रानियों में परमेश्वर के वचन से दूर होने से लेकर उसका विद्रोह करने तक के सभी पापों के विरुद्ध चेतावनी की पांच ताड़नाओं में से पहली है (12:14-29)। लेखक ने "उपदेश की बातें" देने का वर्णन किया (13:22) और उसने उस उद्देश्य को पूरा किया।

आयत 1. आयतें 1 से 4 को आम तौर पर कोष्ठक के रूप में देखा जाता है; परन्तु जैसा कि **इस कारण** से संकेत मिलता है, वे वास्तव में अध्याय 1 में दिए गए तर्क का निष्कर्ष अधिक लगती हैं। लेखक ने अपने विस्तृत तर्क को संक्षिप्त किया, चाहे वह इस पर और बात करता, अपनी इस पुष्टि के साथ कि स्वर्गदूतों के द्वारा दी गई वाचा मसीह के द्वारा दी गई वाचा के बराबर नहीं है (आयत 2)। यदि हम उस उद्धार की अवहेलना करें जो नई वाचा देती है तो बचने की कोई सम्भावना नहीं है (आयत 3)।

आयत 5 से आगे निबन्ध के रूप में यह पत्री मनुष्यजाति की निम्न स्थिति में बदल जाती है और किस प्रकार से मानवीय स्थिति में आकर मसीह हमारे साथ मिल गया। लेखक ने समझाया कि हमें स्वर्गदूतों से जिन्होंने पुरानी व्यवस्था की मध्यस्थता की थी कहीं बेहतर व्यवस्था देने वाले के द्वारा और भी बड़ी आशिषें मिली हैं। इस कारण हम से कहीं अधिक की उम्मीद की जाती है। नियम वही है जो यीशु ने सिखाया था कि जहां अधिक दिया जाता है वहां अधिक की मांग की जाती है (लूका 12:47, 48; मत्ती 11:20-24)। हमें मसीह में बड़े प्रकाशन और आशिषें

मिली हैं, इस कारण उसकी आज्ञा मानने और उसकी वफ़ादार बने रहने की हमारी ज़िम्मेदारी भी बड़ी है।

एक प्रासंगिकता हमेशा धर्मशास्त्र से जीवन तक बनाई जानी चाहिए, और इब्रानियों का लेखक यहां इसे शामिल करने के लिए चौकस था। वह पूरी पुस्तक में धर्मशास्त्र से प्रासंगिकता की ओर जाता रहा। जीवन से तथ्य के महत्व को लागू किए बिना मसीह की महानता को मानना उस बड़ी सच्चाई को किसी पाठक के लिए लगभग बेकार ही कर देगा। परमेश्वर के असीम अनुग्रह को ध्यान में रखते हुए जो पापी मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए संसार में उसने अपने पुत्र को भेजकर दिखाया, हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि हम सुसमाचार के प्रचार की ओर बहुत ही सावधानी से ध्यान दें।

और [*perissōs*] **भी मन लगाएं** का इस्तेमाल ''अधिक से अधिक ध्यान देनें'' के अर्थ में किया गया है। फिलिप्स के अनुवाद में है ''इसलिए हमें सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए।''

हमें ''और भी मन लगाना'' आवश्यक है इसलिए कम से कम इस में इस बात की धमकी है कि यदि हम मन नहीं लगाते तो हम नष्ट हो जाएंगे। जो लोग इस ताड़ना की ओर ध्यान नहीं लगा पाते वे अनन्तकाल के प्रति निश्चिंत हैं।

और भी मन **उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं** लगाना आवश्यक है। हम ने क्या सुना है? शुभ समाचार (या सुसमाचार) में जो कुछ भी है उसे यहां समझ में आता है। सुसमाचार को चार तत्वों वाला बताया जा सकता है। पहले तो इसमें *तथ्य* हैं जिन पर हम विश्वास करते हैं, क्योंकि सुसमाचार के संदेश का सार यही है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। दूसरा, इसमें *प्रतिज्ञाएं* हैं जिन में स्वर्ग की आशा, अनन्त जीवन, पुनरुत्थान में देह के छुटकारे और इस जीवन में परमेश्वर के उपाय की आशा सहित हमारी आशा है (रोमियों 8:24; तीतुस 1:2)। तीसरा, इसमें मानने के लिए *आज्ञाएं* हैं और जिन्हें मानना हमारे लिए आवश्यक है (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16; 2 तीमुथियुस 2:2)। चौथा, इसमें उनके लिए जो उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं *दण्ड* का संकेत है (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9; मत्ती 25:31, 46; इब्रानियों 10:26-29 और 12:28, 29 से तुलना करें)।

जो सुसमाचार हम ने सुना है हमें उस पर मन लगाना आवश्यक है **ऐसा न हो कि बहक कर उन से दूर चले जाएं।** इस वाक्यांश का अनुवाद अलग-अलग किया जाता है: ''ऐसा न हो कि हम किसी समय उन्हें हाथ से जाने दें'' (KJV); ''ऐसा न हो कि हम बहक जाएं'' (NKJV); ''कहीं हम बहक न जाएं'' (NIV)। इस कथन के सही सही अर्थ पर विवाद है। क्या सुसमाचार से हम बहक जाएंगे या सुसमाचार हम से बहक जाएगा? लेखक ने अपने पाठकों को ''खबरदार!'' करते हुए अपने आपको भी शामिल किया।

यूनानी शब्द के अनुवाद ''बहक जाएं'' का मूल अर्थ ''पीछे को बहना'' है और नये नियम में केवल यहीं मिलता है। (ऐसे ही एक इब्रानी शब्द का इस्तेमाल नीतिवचन 3:21 में हुआ है।) यह *parareō* का सामान्य कर्मवाच्य है। इस बहक जाने के लिए कई उदाहरणों का इस्तेमाल किया गया है: जहाज़ अपने लंगर से छूटकर विनाश की ओर बह जाता है; कीमती छल्ला बेपरवाह तैराक की उंगली से फिसल जाता है; या लम्बी दौड़ का धावक दौड़ते दौड़ते गलत मोड़ ले लेता है। ऐसे फिसलने की त्रासदी को मई 2002 में स्पष्ट दिखाया गया जब ओकलाहोमा पुल

को टकराते हुए एक नाव को बहने दिया गया। पुल का कुछ भाग नदी में गिर गया और कई कारें उसी पल पानी में टूट गईं जिस कारण कई यात्री डूब गए।

इसलिए इस शब्द का विचार यह है कि हमें अपने जीवनों को उत्सुक्ता से उस पर लंगर डालना आवश्यक है जो हमें सिखाया गया है और जीवन के अपने जहाज़ को बन्दरगाह में बहने देकर टूटने नहीं देना था। एफ़. एफ़. ब्रूस ने कहा है, ''यहां क्रिया शब्द का जो भी संक्षिप्त लाक्षणिक बल हो पर हमारा लेखक मसीही पाठकों को जिन्होंने सुसमाचार को सुना और उसे ग्रहण किया, चेतावनी दे रहा है कि यदि वे अपने विश्वास को त्यागने की परीक्षा में फंस जाते हैं तो उनकी स्थिति निराशा भरी है।''[11]

आयत 2. जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था वाक्यांश एक ऐसे भाग का आरम्भ करता है जो विषयांतर नहीं है बल्कि जो कुछ पहले हो गया है उसके चरम और आवश्यक निष्कर्ष का काम करता है। इस उपदेश का सम्बन्ध पत्री के सार से है जो पाठकों को विश्वास से दूर जाने से रोकने के लिए है।

लेखक के समय में आम तौर पर इस पर सहमति थी कि स्वर्गदूतों ने व्यवस्था को देने में सहायता की थी। परमेश्वर की प्रेरणा दी गई टिप्पणी से इस विचार को स्वीकृति मिलती थी (प्रेरितों 7:38, 53; गलातियों 3:19)। यदि यह समझ नहीं होती कि स्वर्गदूतों में व्यवस्था को देने में सहायता की थी तो पाठकों या सुनने वालों में यीशु के स्वर्गदूतों के ज़रूरत से ज्यादा बड़ा होने के लेखक के तर्क पर विचार करते हैं।

''जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था'' उसे **स्थिर** (*bebaios*), अपरिवर्तनीय (NASB), ''मान्य'' (RSV), या ''आवश्यक'' (NIV) बताया गया है। इस विवरण का अर्थ है कि व्यवस्था की हर बात अक्षर अक्षर पूरी होने वाली थी; आज्ञा न मानने के लिए दण्ड साफ़ साफ़ बताए गए थे। व्यवस्था आज्ञा न मानने वालों के लिए दिए जाने वाले दण्ड़ों के द्वारा वैध साबित हुई थी। पुराने नियम का अधिकतर इतिहास इस तथ्य की पुष्टि करता है। इसमें एक तथ्य यह है कि दुष्ट राजाओं ने लगभग पक्के तौर पर भी धर्मी राजाओं से कम समय के लिए शासन किया।

गिनती 15:30 में ढिठाई के पापों या ''विद्रोह से'' किए गए पापों के दण्ड बताया गया है। ऐसा पाप शायद ''जान बूझकर पाप'' करने के समान था (इब्रानियों 10:26)। पूरी समझ के साथ किए गए पाप की जिसमें पता हो कि व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर रहा है विद्रोह के पाप के लिए क्षमा की बहुत कम या बिल्कुल गुंजाइश नहीं थी। हर आज्ञा में परमेश्वर ने आज्ञा न मानने का दण्ड बता दिया था। परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं के साथ पूरी तरह से समर्पण के महत्व पर बड़ा ज़ोर दिए जाने से प्रभावित हुए बिना व्यवस्थाविरण की पुस्तक को पढ़ा नहीं जा सकता (देखें व्यवस्थाविवरण 4:2; 28:1, 9, 14-46)।

पुरानी व्यवस्था की वाचा की मुख्य बातें साफ़ साफ़ बता दी गई थीं जब आज्ञा मानने वालों के लिए आशिषें और आज्ञा न मानने वालों के लिए श्राप बताए गए थे (व्यवस्थाविवरण 28:15-46)। व्यवस्था नर्मी को नहीं बल्कि न्याय को बढ़ावा देती थी। उदाहरण के लिए ''आंख के बदले आंख'' साफ़ साफ़ बताया गया था जबकि समकालीन संस्कृतियों के कुछ नियमों में इसके विपरीत ''एक आंख के बदले दो आंखें'' था (देखें आयत 24:19, 20)।[12]

आयत 2 में दो प्रकार के पाप स्पष्ट बताए गए हैं। **अपराध** या "आगे बढ़ जाना," तब होता था जब कोई किसी कार्य को जिसे परमेश्वर की व्यवस्था ने स्पष्ट रूप में मना किया हो न मानता हो। उदाहरण के लिए व्यवस्था में कहा गया था, "तू खून न करना" (निर्गमन 20:13); यदि कोई इस नियम को तोड़ता तो वह अपराधी माना जाता था।

आज्ञा न मानने के लिए शब्द का मूल अर्थ है "न सुनना," या लापरवाही से या बेपरवाही से सुनना। इसमें किसी विशेष बात को जिसकी आज्ञा दी गई हो न करना शामिल है। जब कोई "सब्त के दिन को स्मरण" नहीं रख पाता (निर्गमन 20:8), तो इसका अर्थ है कि उसने "आज्ञा नहीं मानी।"

हम भूल चूक के पापों की बात कर सकते हैं। बाइबल में ये शब्द स्पष्ट रूप में इस्तेमाल तो नहीं किए गए पर इसका विचार पाया जाता है। दोनों प्रकार के पापों के क्षमा किए जाने के लिए प्रार्थना करना सही और उचित है। बहुत से लोग जो खोए हुए हैं पूर्ण रूप से अपराध के दोषी नहीं होंगे, बल्कि भलाई करने के उन अवसरों में नाकाम रहने के कारण होंगे क्योंकि यह भी पाप है (याकूब 4:17)।

ठीक ठीक बदला मिलना पुराने नियम में बहुतायत से दिखाया गया नियम है। झूठी गवाही देने वाले को वैसा ही दण्ड दिया जाता था जैसा उसकी गवाही से किसे को दण्ड मिलना होता था (व्यवस्थाविवरण 19:16–20)। ऐसा दण्ड निश्चित रूप में "ठीक" है। लालची आकान को आज्ञा न मानने के कारण पथराव किया गया था (यहोशू 7:24, 25)। एक वेश्या को पथराव किया गया था (व्यवस्थाविवरण 22:21)। यह न सोचने के लिए कि नये नियम के अधीन दण्ड कम कठोर है, हम हनन्याह और सफीरा को ध्यान में रख सकते हैं (प्रेरितों 5:1–11)। लालच के लिए मृत्यु दण्ड उिदए जाने का एक आदमी का पुराने नियम का एक उदाहरण (यहोशू 7) और उसी कारण के लिए लोगों के मरने का नये नियम का एक उदाहरण है (प्रेरितों 5)।

हमारा परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर है जो "[हर किसी को] उसके कामों के अनुसार बदला देगा" (2 तीमुथियुस 4:14; देखें प्रकाशितवाक्य 20:13)। वह सचमुच में "किसी का पक्ष नहीं करता" (प्रेरितों 10:34)। मूसा की व्यवस्था मसीह की व्यवस्था से कम थी, पर व्यवस्था की आज्ञा न मानने वाले व्यक्ति को कठोरता से और दृढ़ता से दण्ड दिया जाता था। तुलना से पता चलता है कि नई वाचा के अधीन दण्ड किसी प्रकार कम नहीं हो सकता। इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के समय रब्बियों में इस प्रकार का तर्क आम पाया जाता था; इसे लातीनी भाषा में *a minori ad maius* कहा जाता है।[3] इब्रानी में *qal wachomer* (अर्थात "हल्का और भारी") है। कुछ तर्क जो "छोटे से बड़े" की ओर जाता है, वह "और भी कितना अधिक" नियम भी कहा जा सकता है। पहली सदी ईस्वी में रब्बी हिलेल ने इस तर्क को व्यवस्था की व्याख्या से अपने साथ नियमों में से एक बताया।[4]

जो कोई यह सोचता है कि नई वाचा के अधीन उसके पापों को हल्का दण्ड मिलेगा वह गलतफहमी में है। यह मानना गलतफहमी है कि अपने बहुतायत के अनुग्रह में परमेश्वर पापों को दण्ड देने की मांग किए बिना उन्हें नज़रअन्दाज़ कर देगा। उसका अनुग्रह सचमुच में बहुतायत में है, इतना अधिक बहुतायत में कि हम उसका वर्णन भी नहीं कर सकते, पर हमें यह न मान लें कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह के कारण दण्ड के न होने से कोई पाप कर सकता है या

पश्चातापहीन अपराधों को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाएगा। आज्ञा मानना अभी भी आवश्यक है। इसलिए इब्रानियों की पुस्तक इस ढीली सोच के लिए जो कहती है कि हमारा दयालु परमेश्वर हमारे पापों और दोषों को नज़रअन्दाज़ कर देगा चाहे हम पूरी तरह से मन फिराएं या न, एक बड़ी रोक है। परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानने के महत्व पर इब्रानियों की पुस्तक में कई बार ज़ोर दिया गया है (देखें 10:26-29; 12:25)।

हमें यह कहीं नहीं बताया गया कि परमेश्वर साम्प्रदायिकवादी गलती की ओर ध्यान नहीं देगा क्योंकि वह हमारी मूर्खतापूर्ण गलतियों को क्षमा कर देता है। हम सब के पश्चात्तापी हृदय होने आवश्यक हैं। यीशु के लहू से अपनी आत्माओं के धोए जाते रहने के लिए (1 यूहन्ना 1:7-10) हमें परमेश्वर की इच्छा को इसे समझ आने पर मानने को उत्सुक रहना आवश्यक है। यदि हम सोचते हैं कि "यीशु का अद्‌भुत अनुग्रह" हमारे पाप को कम घिनौना बना देता है और हम दण्ड के अधिकारी नहीं रहते तो हम ने इसे "सस्ते अनुग्रह" में बदलकर अपने आपको ढीठ पापी बना लिया है। "छावनी में" पाप परमेश्वर के काम के लिए उसकी कलीसिया के द्वारा सबसे बड़ी बाधा है।

आयत 3. तो हम ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं? इस प्रश्न से एक और प्रश्न उठता है कि हम किससे बचेंगे? इसकी सही व्याख्या अनन्त मृत्यु होगी; इसके अलावा कुछ और करने का अर्थ इस आयत के बल को कमज़ोर करना होगा। पतरस ने मसीही लोगों को समझाया कि "अपने बुलाए जाने को सिद्ध" करो (2 पतरस 1:10)। इस पवित्र व्यक्ति को मसीह के बुलाए जाने को पक्का करने की आवश्यकता क्यों थी यदि उसकी बुलाहट पहले से ही पूरी तरह से सिद्ध यानी पक्की है? एजगर जे. गुडस्पीड ने इसे इस प्रकार कहा है: "इसी कारण हमें उस संदेश की ओर जिसे हम ने सुना है बहुत नज़दीकी से ध्यान देना आवश्यक है। ताकि हम इसे इतना कसकर पकड़े रहें कि यह यह हमारे हाथ से कभी छूटे न।"

यहां उठने वाला प्रश्न अलंकारिक है, क्योंकि उत्तर संदर्भ में ही स्पष्ट है और कहीं और स्पष्ट दिया गया है। *कोई बचाव नहीं है!* 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-10 हमें बताता है कि उनका क्या होगा जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते हैं। जब प्रभु वापस आएगा तो वह "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करने वालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा।"

कोई बचाव क्यों नहीं होगा? क्योंकि पापी व्यक्ति आज्ञापालन को तब तक टाल देगा जब तक बहुत दमर हो चुकी होती है। या जब तक वह मन में इतना कठोर हो जाता है कि वह मन नहीं फिरा सकता। दोनों में से कोई भी स्थिति पापी की आशा के मिटने का कारण बन सकती है। सचमुच एक समय आएगा जब स्वामी फाटक बंद कर देगा और अन्दर आने के लिए तरसते बाहर खड़े कुछ लोगों को प्रवेश नहीं करने देगा (लूका 13:24-28)।

यदि पुराने नियम के अधीन ढिठाई के पाप के दण्ड से बचने का कोई तरीका नहीं था, जो कि इससे कम नियम था तो उनके लिए जो नई वाचा की आज्ञा तोड़कर पाप करते हैं बचने का तरीका कैसे हो सकता है? मसीह को छोड़ उद्धार का कोई और मार्ग नहीं है। इसलिए यदि हम

उसका इनकार करते हैं तो हमें छुटकारे की कोई आशा नहीं है (देखें 10:26; यूहन्ना 14:6)।

लोग मसीह को जाने या उसे तुच्छ ठहराए बिना खो सकते हैं। यदि हम मसीह की शिक्षा में ''निश्चिंत'' रहते हैं तो हमें मिलने वाला दण्ड नरक दण्ड ही होगा। ''निश्चिंत'' (*ameleō*) शब्द का सीधा सा अर्थ ''बेपरवाह होना'' है। कोई भी सांसारिक दिलचस्पी बढ़ नहीं सकती है जब हम उसके प्रति बेपरवाह हों। तो हमें अपने आत्मिक युद्ध में इससे अलग की उम्मीद क्यों करनी चाहिए? जब कोई हत्यारा, व्यभिचारी या शराबी होकर दूर रहा है तो कोई आधार नहीं है जिसके ऊपर उसे धर्मी ठहराया जाए। यह तो ''मैं चोर नहीं हूं इसलिए मेरा कारोबार बढ़ेगा और मैं थोड़े ही समय में धनवान बन जाऊंगा'' कहने की तरह तर्कहीन है। हम से और की उम्मीद की जानी चाहिए क्योंकि हमें उससे कहीं बड़े उद्धार और अनन्त विश्राम का आश्वासन दिया गया है जिसका सपना पुरानी वाचा के अधीन रहने वालों ने देखा हो सकता है।

तंग मार्ग में से जाने वाले व्यक्ति की ओर से लगन होनी आवश्यक है (लूका 13:23, 24)। हमारा ''बड़ा उद्धार'' सारे संसार से बढ़कर कीमती है। यह बड़ा इसलिए है क्योंकि यह हमें पापों और खतरों से बचाता और बड़े प्रतिफल देता है। यह इतना अद्‌भुत है कि इसके साथ न्याय करने के लिए कोई भाषा पर्याप्त नहीं है।[5] यदि हम परमेश्वर के उद्धार की योजना से निश्चित रहें तो अनन्त नरक का वास्तविक खतरा है।

अपने पाठकों को मसीहियत की सच्चाई को अपने हाथ से न निकलने देने के लिए समझाने के बाद लेखक परमेश्वर के संदेश के विषय पर लौट आया। 2:3, 4 में उसने इसके महत्व को रेखांकित किया।

जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई। यह संदेश विशेष रूप में मसीह का है। वास्तव में सच्चाई का पूरा संदेश पहले यूहन्ना डुबकी देने वाले द्वारा नहीं बल्कि सच्चाई का पूरा संदेश यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा नहीं बल्कि यीशु द्वारा सुनाया गया था। कलीसिया का आरम्भ यूहन्ना केसाथ हुआ न हो सकता था। राज्य का आरम्भ यूहन्ना की मृत्यु के बाद हुआ, जो इस बात का पता देता है कि यीशु ने क्यों कहा कि ''जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है'' (मत्ती 11:11)। यह घोषणा जो यीशु ने यूहन्ना के विषय में की थी दिखाती है कि यीशु के चेले जो उस समय वहां थे उन्होंने पिन्तेकुस्त के बाद राज्य के लोग होना था और इस लिए उन्होंने यूहन्ना से बड़े होना था। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु का चेला यूहन्ना के चरित्र से बेहतर था बल्कि यह है कि राज्य के लोगों को बड़ी आशिषें मिली हैं। मत्ती 11:11 की बात हमें यह दावा करने से रोकती है कि कोई भी यूहन्ना की व्यक्तिगत महानता से बढ़कर है।

सुसमाचार पहले ''प्रभु के द्वारा'' सुनाया गया था। इस बात से अधिक प्रभावशाली है कि यह पुरानी वाचा की तरह स्वर्गदूतों के द्वारा सुनाया गया। यहूदीवादी कह रहे हो सकते हैं, ''हमारी व्यवस्था स्वर्गदूतों के द्वारा की गई और यह सुसमाचार मनुष्यों के द्वारा सुनाया गया है।'' परन्तु नई वाचा का मध्यस्थ यीशु है।

राज्य निकट था जब मसीह जो कि राजा है निकट था; उसने अपने राज्य के सभी नियम समझा दिए, अपने व्यवहार के द्वारा इसकी प्रकृति को दिखा दिया और अपने चेलों के लिए अपना संदेश छोड़ दिया। पवित्र आत्मा के द्वारा अगुआई पाकर उन्होंने इसे लागू करना था, इसे बढ़ाना था और राज्य के आने पर इसे स्पष्ट करना था। कुलुस्सियों 1:13 कुलुस्से के पवित्र लोगों के

राज्य में होने की बात करता है! यीशु को यहां और 7:14 में ''प्रभु'' दिखाया गया है, जिसका अर्थ यह है कि वह अपने राज्य के ऊपर हाकिम है (जैसा कि इफिसियों 5:5 में संकेत मिलता है कि परमेश्वर पिता के साथ मिलकर)।

प्रभु के द्वारा दिए जाने के बाद सुसमाचार **सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ है।** सुसमाचार की पुष्टि की सामर्थ की प्रतिज्ञा प्रेरितों को यीशु द्वारा दी गई थी (मरकुस 16:17, 18), और उन्होंने इसे पूरी तरह से इस्तेमाल किया (मरकुस 16:19, 20)। यह ''पवित्र आत्मा के दानों'' के द्वारा उन्हें दी गई आश्चर्यकर्म करने की शक्तियों के द्वारा हुआ।[6] मसीह और प्रेरितों द्वारा सुनाए गए नये संउदेश की पुष्टि के लिए उनके लिए अलौकिक शक्तियों का होना आवश्यक था। इब्रानियों के लेखक ने यह पुष्टि की कि प्रभु द्वारा कहे गए इस संदेश की साफ पुष्टि परमेश्वर द्वारा पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दानों के द्वारा हुई। नये प्रकाशन के लिए पुष्टि के रूप में ईश्वरीय सामर्थ का दिखाया जाना आवश्यक था। उदाहरण के लिए यूहन्ना थोमा जिसने संदेह किया था, को जी उठे प्रभु के दर्शन की बात बताकर यूहन्ना सुसमाचार के अपने विवरण के चरम तक पहुंचा। उस रविवार जब थोमा ने यीशु को देखा तो उसके मुंह से ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!'' ही निकला था (यूहन्ना 20:28)। फिर यूहन्ना ने इसके बाद निम्बन्ध दिया:

> यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।

सम्पूर्ण उद्धार पवित्र शास्त्र को पढ़कर, इस पर विश्वास करके और इसकी आज्ञा मानकर विश्वास के द्वारा पाया जाता है। इसलिए हमें विश्वास करने और उद्धार पाने के लिए आधुनिक आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर अनावश्यक काम क्यों करे?

पुनरुत्थान के सम्बन्ध में सभी प्राचीन और आधुनिक संदेहवादियों का इनका इस तथ्य को बदल नहीं सकता है कि हमारे प्रभु की मृत्यु के केवल पचास दिन बार यरूशलेम में उसके पुनरुत्थान में हज़ारों लोगों ने विश्वास किया था। यदि उन्हें उसके पुनरुत्थान का विश्वास न होता तो यरूशलेम में कलीसिया आरम्भ नहीं हो सकती थी। यह वह बड़ा आश्चर्यकर्म है जिस पर नया नियम ध्यान दिलाता है। इब्रानियों 2:4 यह पुष्टि करता है कि वचन को पक्का करने के लिए भिन्न भिन्न आत्मिक शक्तियां (''दान'') दिए गए थे। यह काम पूरा हो जाने के बाद अगली पीढ़ी के लिए जिनके पास पवित्र शास्त्र में सामर्थ से भरा प्रकट वचन है, ऐसी शक्तियां अनावश्यक बन गईं।

आयत 4. पुष्टि हो चुके संदेश को निरन्तर आश्चर्यकर्मों के द्वारा पुनः पुष्टि करते रहने की आवश्यकता नहीं है। अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा किसी मामले में मिसाल ठहरा देने के बाद वही नियम बन जाता है और वह किसी भी निचली अदालत में लागू होता है। इसी प्रकार से परमेश्वर के वचन के प्रकाशन की पुष्टि एक ही बार सदा के लिए हो गई थी।

आश्चर्यकर्मों के चिह्न प्रेरिताई का प्रमाण थे (2 कुरिन्थियों 12:12) और तब तक रहे जब तक प्रमाण की आवश्यकता थी। **चिह्नों** और **अद्भुत काम** एक ही बात के अलग-अलग विचार थे। ''चिह्न'' से संकेत मिलता था कि आश्चर्यकर्म की घटना से परमेश्वर का संदेश और देखने

वाले के लिए दिया गया। इन चिह्नों को "अद्भुत काम" कहा जाता था क्योंकि इन से देखने वालों के मनों में आश्चर्य होता था। तर्कसंगत रूप में कोई तर्क नहीं दे सकता था कि आश्चर्यकर्म नहीं हुए; वे केवल इतना कहकर आपत्ति कर सकते थे कि ये काम शैतान की शक्ति से हुए थे (मत्ती 12:22-28)।

सामर्थ के काम और प्रकाशन साथ साथ चलते थे क्योंकि नई पुष्टि के लिए नये प्रकाशन का होना आवयश्क था। परमेश्वर जब नया प्रकाशन देता था तो वह संदेश के सुनाने वाले को ईश्वरीय अनुमोदन को दिखाने के लिए शक्तियां देता था। मूसा ने इस्राएलियों और मिस्र के फिरौन के पास भेजे जाने के समय "आश्चर्यकर्म" किए थे (निर्गमन 4:1-9, 29, 30)। एलीशा ने अरामी सेनापति नामान को चंगा किया था जो राजा के बाद दूसरा बड़ा अधिकारी था और उसे परमेश्वर की सामर्थ का विश्वास दिलाया था। बेशक उसके द्वारा उसके देश के कुछ लोग सच्चे परमेश्वर पर विश्वास लाए थे (2 राजाओं 5)।

इस पर अत्यधिक बल दिया जा सकता है कि नया पवित्र शास्त्र और आश्चर्यकर्म साथ साथ चलते हैं। कोई आश्चर्यकर्म करने की शक्ति होने का दावा करने वालों को यह पूछकर चुनौती दे सकता है, "आपका नया पवित्र शास्त्र कहां है?"[7] इसी प्रकार से "नया पवित्र शास्त्र" लिखने वालों को यह पूछकर चुनौती दी जा सकती है, "आपके वे आश्चर्यकर्म कहां हैं जो यीशु के और प्रेरितों के आश्चर्यकर्मों के जैसे हैं? उदाहरण के लिए क्या आपने किसी मुर्दे को जिलाया है?"

मसीह के संदेश की पुष्टि सचमुच के आश्चर्यकर्मों के द्वारा हुई थी (देखें यूहन्ना 20:30; मरकुस 2:10-12)। मरकुस 2 वाले आश्चर्यकर्म से क्षमा करने की मसीह की शक्ति और अधिकार को दिखाया गया। वह लंगड़े को चंगा कर सकता है जो स्पष्ट एक अलौकिक कार्य था, यह स्पष्ट कि वह परमेश्वर के स्थान पर काम कर रहा है और पापों को वैसे ही क्षमा कर सकता है। आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां इस बात का प्रमाण थीं कि इन्हें करने वाले व्यक्ति परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में काम करते थे।

आश्चर्यकर्मो के द्वारा ईश्वरीय संदेशों की पुष्टि आवश्यक रूप में इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक अतीत की बात थी। इसका पता 2:2-4 तथा कहीं और मिलता है (देखें मरकुस 16:20; यूहन्ना 20:30, 31)। "वचन को दृढ़" करने वाले चिह्न (मरकुस 16:20) मरकुस के लिखे जाने के समय तक पूरे हो गए थे। इन शक्तियां या **पवित्र आत्मा के वरदानों** ने उनके द्वारा दी गई आश्चर्यकर्म करने की शक्तियों के परमेश्वर के वचन की पूरी तरह से पुष्टि किए जाने तक रहना था; फिर उन्होंने बंद हो जाना था (1 कुरिन्थियों 13:8-10; इफिसियों 4:8-13)। परमेश्वर की दृढ़ की गई इच्छा जिससे हर प्रकार की आवश्यक अगुआई दी जा सकती थी, से "दानों" की आवश्यकता खत्म हो गई। पौलुस ने कलीसिया की सबसे बड़ी आवश्यकता प्रेम की ओर ध्यान दिलाया जो आश्चर्यकर्म करने की किसी भी शक्ति से अब हमारे (और पहली सदी के लोगों) के लिए कहीं अधिक आवश्यक है। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के पाठक यीशु के आश्चर्यकर्मों को अच्छी तरह जानते थे। उन्हें लगातार पुष्टियां दृढ़ किए जाने की आवश्यकता नहीं थे। चाहें उन्हें उस अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता थी जो इस पत्री से ली गई।

जिस प्रकार से इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने के बाद स्वर्ग से मन्ना मिलना बंद को गया था, वैसे ही कलीसिया के नवजात होने की स्थिति छोड़ने के बाद जिसमें वचन के द्वारा दानों

और पक्का किए जाने की आवश्यकता थी, आश्चर्यकर्म होने बंद हो गए। समय का लम्बा काल न तो कभी था और न इसे देने का कभी ईरादा था जब परमेश्वर अपने लोगों के लिए लगातार आश्चर्यकर्म करता रहा हो। यीशु ने नामान का हवाला देकर इस बात की ओर ध्यान दिलाया जिसे तब कोड़ से चंगाई दी गई थी जब इस्राएल के बहुत से कोड़ियों में से किसी ओर को चंगा नहीं किया जा रहा था (लूका 4:27)।

''वरदानों'' (*merismos*) का अर्थ ''बांटना'' या ''आवंटन'' है। यह रोमियों 1:11 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए ''आत्मिक वरदान'' (*charisma*) के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द नहीं है। उस शब्द का एक बहुवचन रूप *charismata* भी है (देखें रोमियों 12:6; 1 कुरिन्थियों 1:7; 12:4, 9, 28, 30)। इब्रानियों 2:4 की हर बात संदेश के परमेश्वर की पुष्टि के लिए इस्तेमाल की गई। सच्च है कि *merismos* वैसा ही शब्द नहीं है *charisma* है जिसका इस्तेमाल कहीं और ''आत्मिक दानों'' के लिए हुआ है; परन्तु इसका अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि एक शब्द में दूसरा शब्द समा नहीं सकता।

चिह्नों से प्रेरिताई के अधिकार के लिए भयदायक सम्मान लोगों के मन में आया (प्रेरितों 2:43)। प्रेरितों 6:6-8 के बाद ऐसी शक्तियां हर जगह जहां भी प्रेरित स्वयं गए, दी गईं (प्रेरितों 8:14-17; 19:1-6; रोमियों 1:11; 1 कुरिन्थियों 12:8-10)। हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि जहां प्रेरित नहीं जा पाए या व्यक्तिगत रूप से नहीं गए, वहां ऐसे दान देने के अधिकार वाला कोई नहीं था या इन्हें आगे देने की शक्ति किसी को नहीं दी गई। यीशु ने और प्रेरितों ने मुर्दों को जिलाया (प्रेरितों 9:36-43); जब कि आज कोई भी जीवित व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। हमें नकली आश्चर्यकर्म करने वालों पर नज़र रखनी आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर उन्हें जो सच्चाई पर विश्वास नहीं करते या उससे आश्चर्यकर्म करने की स्पष्ट शक्तियों के ''बहकाने वाले प्रभाव'' से भ्रमित होते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:9-11; देखें मत्ती 7:21-23)।

मसीह का बलिदान और ऊंचा किया जाना (2:5-18)

मसीह का स्वर्गदूतों से कम किया जाना और मृत्यु का सवाद चखना (2:5-8)।

5उसने उस आने वाले जगत को जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के आधीन न किया। 6वरन किसी ने कहीं, यह गवाही दी है,

''मनुष्य क्या है, कि तू उसकी सुधि लेता है?
या मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उसकी चिन्ता करता है?''
7''तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया;
तूने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा
और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया;
8तूने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया:
इसलिए जब कि उसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया।''

तो उसने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके अधीन न हो: पर हम अब तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते।

आयत 5. 2:1-4 वाली ताड़ना के बाद लेखक स्वर्गदूतों पर यीशु की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में अपने तर्क की ओर लौट आया।

आने वाले जगत मसीहा के युग को कहा गया है जिसमें अब हम रहते हैं (देखें 6:5)। इसका आरम्भ स्वर्ग में राजा के रूप में यीशु का राजतिलक होने और उस राज्य को चलाने के लिए आत्मा के उस राज्य को चलाना आरम्भ करने की बात कि प्रेरितों 2 में पृथ्वी पर स्पष्ट होने के साथ हुआ। बहुत से लोगों के विचार के विपरीत, यीशु इस युग पर हाकिम है (मत्ती 28:18)। हम भी उस युग में रहते हैं जिसमें यीशु के सेवकों के रूप में प्रेरित परमेश्वर के लोगों पर शासन करते हैं। उन्हें यह शासन कैसे मिला? अपने लेखों में उन्हें दी गई शिक्षा के द्वारा जिसमें उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा गवाही दी जाती थी (मत्ती 19:28)।

''आने वाले जगत'' जहां तक इब्रानियों की पुस्तक की शिक्षा की बात है, अभिव्यक्ति को उस समय के लिए लागू करना जो यीशु के द्वितीय आगमन के बाद आएगा इस वाक्यांश को निकम्मा बना देता है। लेखक यीशु की श्रेष्ठता को अब दिखा रहा था न कि भविष्य के किसी हज़ार वर्षीय राज्य में।

जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं वाक्यांश इस बात का संकेत हो सकता है कि इब्रानियों के नाम पत्र पहले प्रवचन के रूप में सुनाया गया था। किसी भी सावधान पाठक के लिए यह निष्कर्ष निकालना सम्भव है कि इब्रानियों की पुस्तक पहले एक प्रवचन के रूप में दी गई थी।

आयत 6. किसी ने यह गवाही दी है का अर्थ यह नहीं है कि भजन संहिता 8:4-6 का मूल लेखक अज्ञात था या इसका स्रोत ईश्वरीय प्रेरणा के बिना केवल मानवीय लेखक था। इसके बजाय कहने का अर्थ यह है कि संदेश और किसी भी बात से अधिक महत्वपूर्ण है। ऐसी ही अभिव्यक्ति का इस्तेमाल इब्रानियों 4:4 में हुआ है: ''क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं यों कहा है'' यह स्पष्ट है कि लेखक इस वचन के स्रोत को जानता था। फिलो ने भी ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया जब उसे वचन के लेखक का पक्का पता था।[8] जब स्रोत परमेश्वर है तो मानवीय लेखक की पहचान आवश्यक नहीं है।

भजन संहिता 8:4 का उद्धरण **मनुष्य का पुत्र** स्पष्टतया भजन संहिता में सब नाश्वान मनुष्यों की बात करता है। कुछ लोगों के लिए यह लगता है कि भजन लिखने वाले का कहने का अर्थ भविष्यद्वाणी के रूप में यीशु के लिए अपने लिए पसन्दीदा अभिव्यक्ति हो सकता है। परन्तु इब्रानी कविता की समानांतरता इस बात की बात करती है कि यह वाक्यांश केवल ''मनुष्यजाति'' के लिए था। ब्रूस ने लिखा है, ''यह तथ्य बना रहता है कि जब से यीशु ने अपने आपको मनुष्य का पुत्र कहा, यह अभिव्यक्ति मसीही लोगों के लिए अपने आरम्भ के शब्द के आगे का संकेत देने के लिए थी, और इब्रानियों के लेखक के लिए इसका यही संकेत था।''[9]

अन्य शब्दों में ''मनुष्य का पुत्र'' अभिव्यक्ति का अर्थ था ''मनुष्य,'' परन्तु यह प्रतिरूप का रूप भी है जो कि मसीह है।[10] यीशु के लिए और जगह पर ''मनुष्य का पुत्र'' का इस्तेमाल कई बार हुआ है (उदाहरण के लिए दानिय्येल 7:13 में और नये नियम में अस्सी से अधिक

बार), तो समाधान इस विचार में हो सकता है कि इस आयत का दोहरा अर्थ था, जिसमें पहली प्रासंगिकता मनुष्य के लिए और दूसरे मसीह और उसके शासन के लिए थी। यदि "मनुष्य का पुत्र" केवल मनुष्यजाति के लिए है तो भजन लिखने वाले का आश्चर्य यह था कि परमेश्वर इतने दीन मनुष्य की कितनी चिंता करता है और उसने उस में अपनी कितनी दिलचस्पी दिखाई है।[11]

आयत 9 में साधारण मनुष्य और मसीह के बीच अन्तर किया गया है, जिसे परमेश्वर ने मृत्यु सहित (जो अभी मनुष्य के अधीन नहीं है, जैसे आयत 8 से संकेत मिलता है) अधिकारी ठहराया है। यीशु ने स्वेच्छा से परमेश्वर के आगे अपने समर्पण के भाग के रूप में मृत्यु को शामिल किया। उसे मरना पड़ा जैसे हम मरते हैं। आयतें 7 और 9 कहती हैं कि उसे "कुछ ही" समय के लिए स्वर्गदूतों से कम किया गया जो अवश्य ही पृथ्वी पर उसके समय की बात होगी।

यीशु के प्रभु होने का यह विचार पवित्र शास्त्र की अन्य बातों के उलट नहीं है। बल्कि इससे ऐसे प्रश्न उठते हैं जिनका उत्तर हम नहीं दे सकते। उदाहरण के लिए स्वर्गदूतों ने उसकी रक्षा करनी थी (मत्ती 4:5, 6; देखें भजन संहिता 91:11, 12) परन्तु क्या उन्होंने ऐसा उसकी आज्ञा के कारण किया या पिता से मिले काम के रूप में? निश्चय ही वह अपने सहायकों को आज्ञा दे सकता होगा, क्योंकि उन्होंने गतसमनी में उसकी सहायता की थी (लूका 22:43); परन्तु उसने कहा कि उसे स्वर्गदूतों की सहायता के लिए "अपने पिता से विनती" करनी पड़नी थी (मत्ती 26:53)। यदि उसे उनके ऊपर अधिकार था तो क्या वह पिता के पास गए बिना उनको आज्ञा नहीं दे सकता था?

परमेश्वर के बनाए विशाल संसार के हिसाब से मनुष्य तो धूल के कण जैसा है। सर्वशक्तिमान सृजनहार द्वारा जो हमारे "सूर्य से तीसरी चट्टान" की "सुधि" लेकर हम पर अनुग्रह और महिमा देता है कितना अद्भुत है! बेशक अपेक्षाकृत हमारे छोटे गृह पर उसके सुधि लेने का चरम बिन्दु मसीह का आना था। हमारे तुच्छ होने के बावजूद परमेश्वर ने हमारी "सुधि ली" है (आयत 6; KJV)।

NASB में कहा गया है कि परमेश्वर को मनुष्य **की चिंता** है, जो कि मूल शब्द से अच्छी तरह मिलता है। वह केवल "सरसरी बुलाता" नहीं है।[12] याकूब 1:27 सुझाव देता है कि अनाथों और विधवाओं की सुधि लेने का अर्थ ऐसे लोगों को देखने जाने से कहीं बढ़कर है। यानी इसमें उनकी "देखभाल" शामिल है। "यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मैं तो मरने पर हूं; परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुंचा देगा, जिसके देने की उस ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ लगाई थी" (उत्पत्ति 50:24)। "सुधि लेना" अपने लोगों को आशिषें देने के लिए परमेश्वर द्वारा किया गया विशेष कार्य था; यह यीशु के आने से मनुष्यजाति के लिए किया जाना था। अधिक से अधिक यह कहना कि "परमेश्वर ने यीशु के महत्वहीन होने के कारण उसकी सुधि लेनी थी" बहुत ही बेतुका लगता है। रॉबर्ट मिलीगन ने कहा है, "कि यह सामान्य रूप में मनुष्यजाति के लिए है न कि व्यक्तिगत रूप में यीशु मसीह के लिए माना जाता है, जैसा कि कुछ लोगों ने आरोप लगाया है [भजन संहिता 8] से और प्रेरित के तर्क के दायरे से भी अपने आप ही यह स्पष्ट है।"[13]

आयतें 7, 8. "तूने उसे [मनुष्य] स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया" (आयत 7)। यह भजन संहिता 8:5 से लिया गया उद्धरण है। अनुवादित शब्द "स्वर्गदूतों" को इब्रानी धर्मशास्त्र

में ''ईश्वरों'' (*'elohim*) है, परन्तु इस शब्द का अर्थ ''ईश्वरीय जीव'' हो सकता है। यह इस बात का संकेत देता हुआ लगता है कि LXX इस शब्द का अनुवाद ''स्वर्गदूतों'' करके भजन संहिता के सही विचार को प्रस्तुत करता है। NASB ने भजन संहिता 8:5 में *'elohim* का अनुवाद ''परमेश्वर'' किया गया है परन्तु KJV (और हिन्दी-अनुवादक) में ''स्वर्गदूतों'' हुआ है।

इस जीवन में रहते हुए मनुष्य स्वर्गदूतों से कम ही रहता है। इसे अनन्तकाल को ध्यान में रखते हुए जैसा कि NASB में किया गया है ''थोड़ी देर का समय'' माना जा सकता है। यीशु हमारे जैसा केवल ''थोड़ी देर'' के लिए था। यदि ऐसा है तो लेखक सुझाव दे रहा था कि केवल अन्तिम आदम ''मसीह'' के द्वारा ही मनुष्य संसार और अपने भाग्य पर फिर से नियन्त्रण पा सकता है, जो पहले आदम के द्वारा छिन गया था। मनुष्य को मूल में ऐसा नियन्त्रण पाने के लिए ही बनाया गया था। मृत्यु के ऊपर वश इसे आदम के पाप के द्वारा खो दिया गया था केवल मसीह में फिर से पाया जा सकता है। यह तथ्य इस बात की व्याख्या करता है कि **तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया** (आयत 8)। सब कुछ मनुष्यजाति के नीचे किया गया है इसलिए बेशक उन्हें मसीह के नीचे किया गया है।

आप कह सकते हैं, ''इसमें केवल मृत्यु से कहीं बढ़कर अर्थ है, क्योंकि मनुष्य पृथ्वी के अधिकतर भाग पर नियन्त्रण नहीं रखता है।''[14] पशुओं, मौसम के तत्वों और पृथ्वी की परतों पर विचार करें जो मनुष्य के नियन्त्रण में नहीं हैं। मनुष्य को यदि एक दिन हर जानवर, मौसम के हर तत्व और पृथ्वी की परतों पर नियन्त्रण मिल भी जाए तो भी उसे मृत्यु को वश में रखने के योग्य होने की कोई आशा नहीं है। वह कुछ सीमा तक अपनी उम्र को बढ़ा सकता है परन्तु मृत्यु उसकी शक्ति के दायरे के बाहर है। यह इस वचन के संदेश का भाग है।

मसीह हमारे उद्धार का कर्त्ता (2:9-13)

[9]पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे।

[10]क्योंकि जिसके लिए सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। [11]क्योंकि पवित्र करने वाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं: इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। [12]वह कहता है,

''मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा,
सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।''

[13]और फिर यह,

''मैं उस पर भरोसा रखूंगा'';

और फिर

''यह कि देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया।''

जिस सच्चाई में हमारी विशेष दिलचस्पी होनी चाहिए वह मनुष्य के अधिकार में इतनी नहीं दी गई है बल्कि जो यीशु ने हमारे लिए जय पाई है उसमें है। आइए अब हम पुछते हैं कि हमारे लिए हमारे महान छुड़ाने वाले ने क्या किया है।

आयत 9. उसने एक विशेष उद्देश्य के लिए थोड़े समय के दौरान अपने आपको **स्वर्गदूतों** के नीचे दीन किया। NIV और KJV में कहा गया है कि यीशु को ''स्वर्गदूतों से थोड़ा कम'' किया गया। गैरलड एफ. हाअथॉर्न का कहना है कि **थोड़ी देर** को अब यूनानी शब्दों का बेहतर अनुवाद माना जाता है।[15] इस वाक्यांश का अनुवाद जैसे भी हो पर अर्थ वही रहता है। ठहराए हुए समय के लिए यीशु ने पृथ्वी पर स्वर्गदूतों से कम स्थिति ले ली। वह यहां तक झुक गया ताकि उसे मृत्यु आ सके। यह सच्च है कि स्वर्गदूत मर नहीं सकते परन्तु वे खोए हुए पापियों का उद्धार भी नहीं कर सकते या मनुष्य को मृत्यु के ऊपर विजय नहीं दिला सकते।[16]

2:9–13 का यह भाग दिखाता है कि दुख उठाना छुड़ाने वाले की ईश्वरीय योजना में था; उसकी पीड़ा संयोगवश नहीं थी। यह वचन यह भी दिखाता है कि छुटकारे की इस प्रक्रिया के विशाल आरम्भ करने वाला परमेश्वर ही था।[17] उसका सम्पूर्ण लक्ष्य बहुत से पुत्रों को महिमा में लाना था।

यीशु पृथ्वी पर मृत्यु के कष्ट के कारण आया। ''कारण'' (KJV में ''लिए'') *huper* है जिसका अर्थ है ''की ओर से'' या वैकल्पिक आत्म–बलिदान की तरह है। मसीही मेरी जगह पर मेरे लिए मर गया। वह क्रूस पर मेरे स्थान पर मर रहा था! हम सचमुच में कह सकते हैं, ''वहां पर, मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के लिए ही, मैं जाता हूं।'' उसका आना, मरना और ऊंचा किया जाना सब ''परमेश्वर के अनुग्रह से'' पूरा हुआ। पापी हो या पवित्र जन वह ''हर किसी'' के लिए मरने को तैयार था। उसने इस प्रकार से अपने शत्रुओं के लिए भी दुख सहा (रोमियों 5:8–10)।

हमारे उद्धारकर्त्ता का देहधारी होना, मृत्यु, प्रायश्चित और मध्यस्थता हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम के द्वारा हमारा होता है (यूहन्ना 3:16)। दुख उठाने के लिए उसके तैयार होने के कारण, आज्ञा मानना सीखकर (5:8, 9) अब वह ''अपने सब आज्ञा मानने वालों'' का उद्धारकर्त्ता बनकर **महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए** है (5:9)। वह हमारा महिमाप्राप्त छुटकारा देने वाला है और जो लोग उसकी आज्ञा मानते हैं वे चुने हुए लोग बन जाते हैं। अन्य लोग चाहे धनवान हों, पर इस धन के मुकाबले जो मसीह के द्वारा हमें मिला है, कंगाल हैं।

मसीह **हर एक मनुष्य** के लिए मरा, न कि केवल किसी कथित ''चुने हुए'' समूह के लिए। मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित इस पुष्टि में सीमित प्रायश्चित कहलाने वाली किसी शिक्षा की झलक नहीं है।[18] यदि जो चुने नहीं गए हैं वे नरक में जाएंगे और बिना आशा के जाएंगे, तो उसकी मृत्यु एक व्यर्थ बलिदान था, कम से कम मनुष्य जाति के न चुने हुए भाग के लिए। मार्शल कीबल कहा करते थे, ''चुनाव इस प्रकार है: परमेश्वर आपके पक्ष में मत डालता है,

शैतान आपके विरुद्ध में मत डालता है और आप निर्णायक मत डालते हैं।'' जितनी यह बात सीधी है उतनी ही अच्छी भी लगती है।

अपने दीन किए जाने और मृत्यु के कारण मसीह को अति ऊंचा किया गया है। फिलिप्पियों की पत्री में पौलुस ने इस बात को जोड़ा कि उसके ऊंचा किए जाने के साथ हर घुटने के लिए झुकने और हर जीव के मसीह को प्रभु मानने का समय आएगा। उन प्रसिद्ध लोगों का ध्यान करें जो आज के समय में रह रहे हैं, चाहे वे राजनैतिक, सैनिक या मनोरंजन जगत के हैं; वे सब यीशु के आगे झुकेंगे (फिलिप्पियों 2:8–11)। सब लोग, उनके अपने अपने विचार चाहे जो भी हों, एक दिन पूरी तरह से उसे मान लेंगे! यशायाह के दिनों में इस ऊंचा किए जाने की प्रतिज्ञा उसकी मृत्यु के परिणाम बताई गई थी (यशायाह 53:12)। मसीह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ राज करता है, जिसका अर्थ यह है कि उसे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में राजमुकुट पहना दिया गया है (1 तीमुथियुस 6:15; इब्रानियों 8:1; देखें प्रकाशितवाक्य 17:14)।

कोई पूछ सकता है, ''अपनी सारी ईश्वरीय शक्ति के साथ परमेश्वर अपने पुत्र के सर्वोच्च बलिदान को छोड़ किसी और ढंग से उद्धार कर काम क्यों नहीं कर सका?'' जो व्यक्ति यह कहता है, मेरे मन में ऐसे परमेश्वर के लिए उच्च विचार नहीं हो सकता जो अपने पुत्र को दुष्ट संसार के लिए मरने को दे दे। वह हमें परमेश्वर के बजाय अपने बारे में अधिक बता रहा है। उसे लगता है कि उसकी अपनी समझ हमारे प्रेमी पिता से बढ़कर है। वह कैसे बताएगा कि संसार का उद्धार कैसे हो? यदि कोई और तरीका होता तो परमेश्वर निश्चय ही उसका इस्तेमाल करता।

आयत 10. ''उद्धार पाने वालों'' (1:14) को ''पुत्र'' कहा गया है। यीशु को ''सब के लिए मृत्यु का स्वाद'' चखना आवश्यक था (आयत 9)। जो कि उनके लिए ही है जो ''मीरास पाएंगे और जो पुत्र'' हैं।

मसीह का मानवीय स्वभाव विशेषकर उसकी मृत्यु है। बहुत से यहूदियों के लिए ठोकर की चट्टान थी (1 कुरिन्थियों 1:23)। वे जानते थे कि ''मसीह सर्वदा रहेगा'' (यूहन्ना 12:34)। इन पीछे मुड़ने वाले यहूदी मसीही लोगों को यह दिखाने के लिए कि उनके लिए जिस मनुष्यता ने यीशु को मरने दिया वह परमेश्वर की योजना का भाग थी, इब्रानियों के लेखक को विवश होना पड़ा।

हमारे उद्धार के काम को करने के लिए मरना **उसे यही अच्छा लगा** (आयत 10)। आयत 10 को लेख के इस भाग का ''थीसिस'' कहा जा सकता है (2:10–18)। अपने दुख उठाने में यीशु का लक्ष्य **बहुत से पुत्रों को महिमा में** लाना था। मरकुस ने यीशु के होंठों से इसी उद्देश्य को उद्धृत किया: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे'' (मरकुस 10:45)। यीशु हमारे पापों को ढांपने और परमेश्वर की पुस्तक में से उन्हें मिटाने के लिए मरा! इस प्रकार से परमेश्वर का प्रेम दिखाया गया, और हम स्पष्ट रूप में उस उत्तर को देख सकते हैं जो हमें देना है (1 यूहन्ना 4:19)।

''उसे यही अच्छा लगा'' इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह की मृत्यु हमारे लिए परमेश्वर के बड़े प्रेम को दिखाने का बेहतरीन ढंग था। अरस्तु ने ''अच्छा'' शब्द का अर्थ ''ऐसा ही होना था'' के अर्थ में इस्तेमाल किया। ब्रूस ने लिखा, ''हमारे अपने प्रभु के दुख भोगने में

हम परमेश्वर के अपने हृदय को खुला हुआ देखते हैं; और कहीं भी हम परमेश्वर को और पूरी तरह से या और योग्य ढंग से नहीं देखते जैसा कि हम उसे 'मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप' '' करने में देखते हैं [2 कुरिन्थियों 5:19]।[19]

क्योंकि जिसके लिए सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है 1:2, 3 की बात करता है जहां यीशु को ''सारी वस्तुओं का वारिस'' बताया गया है। वह अपने सामर्थी वचन के द्वारा ''सब वस्तुओं को सम्भालता है।'' सब कुछ मसीह के द्वारा बनाया गया था (यूहन्ना 1:3; देखें रोमियों 11:36)। सारी सृष्टि परमेश्वर और मसीह की महिमा के लिए विद्वान है।

वह हमारे उद्धार का **कर्त्ता** (NASB; NIV में लेखक-अनुवादक) और ''कप्तान'' (KJV) है (देखें 12:2)। यहां अनुवाद हुए शब्द ''कर्त्ता'' (*archēgos*) का अर्थ ''पथखोजक'' या ''मार्गदर्शक'' है।[20] हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह ने रास्ता बना दिया है जिस पर से ''बहुत से पुत्रों'' को महिमा में लाया जा सकता है।[21] राजा जेम्स के समय में जिसने 1611 में अधिकृत (किंग जेम्स) बनाने की आज्ञा दी, ''कप्तान'' उसे कहा जाता था जो युद्ध में सेना की अगुआई करता था। प्राचीन सांसारिक यूनान लेखों में इस शब्द का इस्तेमाल उस नायक के लिए किया जाता था जिसने नगर की स्थापना की हो और उसे नाम दिया हो और इसके संरक्षक का नाम दिया हो।[22] ऐसा विवरणात्मक पद निश्चय ही मसीह के लिए लागू होता है, जिसने हमें महिमा का मार्ग दिखाया है!

हमें **सिद्ध** करके उसने हमारे लिए अब भी सर्वशक्तिमान के महिमामय दरबार में जाना सम्भव बना दिया है (4:15, 16)। तो यीशु को ''सिद्ध'' कैसे किया गया? क्रिया रूप के सम्बन्ध में ''सिद्ध'' (*teleioō*) का अर्थ ''किसी प्रक्रिया को पूरा करना'' है। यहां पर वह पूरा होना दुख सहने के द्वारा हुआ था।[23] मसीह का ''सिद्ध'' बनना यह सुझाव नहीं देता है कि उसमें पहले कोई नैतिक दोष था; बल्कि यह इस बात का संकेत है कि उसे **दुख उठाने के द्वारा** हमारा महायाजक होने के लिए पूरी तरह से योग्य बनाया गया। सिद्धता को आम तौर पर इब्रानियों की पुस्तक में दुख उठाने के साथ जोड़ा गया है (देखें 5:8, 9)। मसीह को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध किया गया था। यानी उसे उस काम को पूरा करने के लिए ''योग्य'' या ''पूरी तरह से प्रभावशाली'' बनाया गया।[24] मानवीय रूप में कहें तो यीशु में शरीर की वे सब कमज़ोरियां थी जो हम में हैं; उसे वैसे ही बड़ा होना पड़ा, जैसे हम होते हैं (देखें लूका 2:52)। परमेश्वर के सामने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित भेंट करने के लिए प्रभावी होने के लिए, याजक के लिए पूरी तरह से मानवीय आवश्यकताओं और समस्याओं की समझ होना आवश्यक था। यीशु ने हमारे पापों के प्रायश्चित के रूप में अपने आप को दे दिया; ऐसा उसने इसलिए किया ताकि परमेश्वर पापों को क्षमा करने में धर्मी ठहरे (रोमियों 3:23-26)।[25]

न्याय की अपनी मांग को पूरा करना परमेश्वर की योजना का ईश्वरीय पहलू था, परन्तु यीशु को मानवीय पक्ष को भी पूरी तरह से पता होना आवश्यक था (2:17, 18)। आतय 10 चाहे यह घोषणा करती है कि उद्धारकर्त्ता दुख उठाए बिना सिद्ध नहीं हो सकता था पर अगली आयत दिखाती है कि अपने देहधारी हुए बिना हमारे उद्धाकर्त्ता के लिए यह असम्भव होना था। अब वह पूरी तरह से हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है यानी दुखी हो सकता है क्योंकि वह पूरी तरह से दुख उठाने में हमारे साथ भागीदार हुआ।

आयत 11. याजक के रूप में सेवा करने वाले के लिए लोगों को समझने के लिए उन में से होना आवश्यक होता था। NASB में **सब एक ही मूल से हैं,** NIV में ''एक ही परिवार से हैं,'' और NEB में ''एक ही कुल से हैं'' है।[26] व्यवस्था के अधीन शुद्ध किए जाने की प्रक्रिया से पवित्र किए जाने वाला व्यक्ति लोगों के लिए काम करता था और उन में से होता था। यह वचन बेशक यीशु की बात करता है जो **पवित्र करने वाला** है। यह एक तथ्य है बेशक उसने पिता से सच्चाई के द्वारा प्रेरितों को पवित्र करने की प्रार्थना की (यूहन्ना 17:17)। पुरानी वाचा के अधीन परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को पवित्र करता था (निर्गमन 31:13; आयत 20:8; 22:32; यहेजकेल 37:28)। यहां ज़ोर मसीह के ऊपर है क्योंकि हमें उसी के लहू के द्वारा पवित्र किया जाता है (देखें इब्रानियों 10:29)। यीशु ने अपना भरोसा पिता में रखा (आयत 13)।

''पवित्र'' (*hagiazō*) का इस्तेमाल नये नियम में दो अर्थों में हुआ है: ''शुद्ध, पवित्र करना या पवित्र बनाना'' और ''किसी पवित्र इस्तेमाल के लिए अर्पण करना या साधारण से अलग करना।'' सामान्य परिभाषा ''अलग करना'' है और इसका मूल अर्थ केवल ''अलग होना'' है। शब्द का संज्ञा रूप *hagios* है जिसका अर्थ ''संत'' है। इब्रानियों 10:10 ''यीशु मसीह की देह के एक भी बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा'' हमारे पवित्र किए जाने की बात करता है। उसकी मृत्यु के द्वारा हमें परमेश्वर की आराधना और सेवा करने के लिए अलग किया जाता है। उसके ''पवित्र'' लोग होने के कारण हम एक दिन उसकी महिमा में प्रवेश करेंगे।

''पवित्र'' किए जाने या अलग ठहराए जाने का अर्थ केवल यह है कि हम मसीह के जैसे बनें और महिमा के अपने मार्ग को पाने के लिए उसके नमूने का पालन करें। ब्रूस ने कहा है, ''पवित्र किया जाना महिमा का आरम्भ है और महिमा पवित्र किए जाने का पूरा होना है।''[27] हर सम्भव ढंग से हमें मसीह के साथ **एक** होना है जिसने हमारे स्वभाव में सहभागी होने में हमारी तसह मृत्यु का सामना करने के लिए अपने आपको दे दिया। फिलिप्पस के अनुवाद में कहा गया है कि पवित्र किए जाने वाला और पवित्र करने वाला ''में सामान्य मनुष्यता की सांझ है।'' पीड़ इस बात से अधिक भाग स्वादास्तमक विचार से अधिक कोई और बात खण्डन नहीं कर सकती है (कि यीशु केवल मनुष्य होने के लिए प्रकट हुआ या *लगा*; आयत 14 पर चर्चा देंखें)।

वचन देने में जो पवित्र करता या ''बनाता'' और ''सब पवित्र किए हुए लोगों में साझी करके मीरास'' देता है (प्रेरितों 20:32) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने सहयोग दिया। आयत 11 में यह संकेत देते हुए कि यीशु इस काम को निरन्तर करता रहता है ''पवित्र किए जाते'' शब्द वर्तमान कृदंत है।

हमारे साथ अपनी निकटता और एकता के कारण मसीह हमें **भाई कहने से नहीं लजाता।** हम कलीसिया के हर सदस्य (जिसमें ''बहनें'' भी हैं) के साथ प्रभु के भाई हैं (मत्ती 12:50; रोमियों 8:29; इब्रानियों 2:17)। कलीसिया का भाग होने के कारण हम मसीह का भाग भी हैं। मसीही होकर हम मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं, यानी हम प्रतीकात्मक अर्थ में आज संसार में मसीह बन जाते हैं। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि मसीह पौलुस को कैसे बता पाया कि वह उसे सता रहा था (प्रेरितों 9:4)। पति और पत्नी की निकटता मसीह और उसकी कलीसिया का नमूना है (इफिसियों 5:22–30)। मसीह और अपनी ''संतान'' के लिए परमेश्वर की इच्छा एक परिवार और एक स्वभाव में एक बन जाने की है। इसलिए मसीह के लिए मरने

तक जाना आवश्यक था। इस लिए हम मसीह भाई के बात करके, सही कर सकते हैं, चाहे नये नियम में हमें इस अभिव्यक्ति के इस्तेमाल का कोई उदाहरण नहीं मिलता। इतने पवित्र और शुद्ध व्यक्ति को हम से लज्जित होने का हर अधिकार होना था परन्तु वह हम से लजाता नहीं है। जो अपने भाई से प्रेम करता है वह उसकी कमियों या समस्याओं के बावजूद उससे कभी लज्जाता नहीं है।

आयत 12. इस आयत में भजन संहिता 22:22 का उदाहरण है, जो मसीह के अपनी कलीसिया के साथ इस निकटता को समझाता है। इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने तक हर मसीही, निश्चय ही हर इब्रानी मसीही को मालूम होगा कि भजन संहिता 22 मसीहा से सम्बन्धित भजन है क्योंकि यीशु ने क्रूस पर इसे दोहराया था। भजन संहिता 22:1 को मत्ती 27:46 और मरकुस 15:34 में उद्धृत किया गया है। भजन संहिता 22:1, 8, 15, 16 और 18 सब को नये नियम में उद्धृत किया गया है। भजन संहिता में बोलने वाला मसीह था, जो आत्मा में दाऊद के द्वारा बात करता था (देखें 1 पतरस 1:11)। परन्तु भजन संहिता की कुछ बातें केवल दाऊद के लिए लागू होनी थी। उदाहरण के लिए "मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं" (भजन संहिता 22:6) की बात यीशु के लिए लागू नहीं हो सकती। बिना यह जाने कि वे लोग भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहे थे, क्रूस के आस पास खड़े और यीशु के ठट्ठा करने वालों ने भजन संहिता 22:8 के विचार को बोल दिया: "कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है" (देखें मत्ती 27:43)। स्पष्ट रूप में कहें तो भजन संहिता 22:13–18 की भाषा दाऊद के बजाय यीशु पर अधिक लागू होती है।[28]

मसीह को **सभा के बीच में** परमेश्वर **नाम** को **सुना**[ते] और **गा**[ते] हुए दिखाया गया है। अनुवाद हुआ शब्द "सभा" (*ekklēsia*) है। यह वचन एक सवाल खड़ा करता है कि "यीशु ने कलीसिया के बीच में कब गाया?" (आयत 12)। उसके गाने का हमारे पास केवल एक ही उदाहरण है (मत्ती 26:30), चाहे उसने आराधनालय की सभाओं में कई बार गाया हो सकता है। परन्तु वहां इसका अर्थ यह है कि अपने भाइयों के साथ गाता रहता है! इस कथन का सही अनुवाद "कलीसिया के बीच में" (KJV) जिसका अर्थ यह है कि कुछ अर्थ में यीशु आज हमारे साथ गाता है।[29] वह अपने आत्मा में हमारे साथ तब भी गाता हो सकता है जब हम उसके भाइयों के रूप में आराधना में गा रहे होते हैं (मत्ती 18:20; 28:20)।

"सभा" उसके भाइयों की सभा को कहा गया है, परन्तु इस शब्द का पहली सदी में एक सामान्य सांसारिक अर्थ भी था (देखें प्रेरितों 19:41)। यीशु मत्ती 26:30 में एक सभा में अपने प्रेरितों के साथ था परन्तु अभी यह वह कलीसिया नहीं थी जिसे उसने अपने लहू से खरीदना था (प्रेरितों 20:28; ASV)। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने तक *ekklēsia* शब्द तुरन्त यीशु मसीह की कलीसिया के लिए इस्तेमाल होने लगा था।

अपने भाइयों के साथ इस गाने का अर्थ मसीही लोगों के साथ अब उस का आत्मिक रूप में गाना है। इस तथ्य को राज्य में अब हमारे साथ प्रभु भोज में उसके भाग लेने से मिलाया जा सकता है (मत्ती 26:29)।

आयत 13. "मैं उस पर भरोसा रखूंगा" यशायाह 8:17 और 2 शमूएल 22:3 के LXX अनुवाद से लिया गया था (भजन संहिता 18:2 भी देखें)। यशायाह 8:17, 18 आम तौर पर

''ठोकर की चट्टान'' (भजन संहिता 8:14) के रूप में मसीह के लिए प्रासंगिक होता था।[30] सुझाव दिया जा सकता है कि पृथ्वी पर रहते समय यीशु पूरी तरह से मनुष्य होने की स्थिति में था जैसा यशायाह था। और इस कारण उसे परमेश्वर में भरोसा रखना आवश्यक था। परन्तु मत्ती 27:43 में ताने का इस्तेमाल किया गया जब भीड़ ने यह कहते हुए यीशु को उद्धृत किया, ''मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।'' फिर भी क्रूस पर यह हमारे प्रभु के मन की वास्तविक अभिव्यक्ति थी। शरीर में रहते हुए उसके लिए ''परमेश्वर पर पूरी निर्भरता में उन सीमाओं के भीतर रहना'' आवश्यक था। परमेश्वर के लोगों का जो नया समुदाय उस ने बनाया था उसे भी वही करना था।[31]

पिता के यीशु के पूर्ण भरोसे को भजन संहिता 16:8–11 में दाऊद के शब्दों में व्यक्त किया गया है: ''मैंने यहोवा को निरन्तर अपने समुख रखा है, इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है इसलिए कि मैं न डगमगाऊंगा।'' इस वचन को पिन्तेकुस्त के लिए पतरस के प्रवचन में प्रेरितों 2:25–28 में दोहराया गया है। यह भरोसा पूरी तरह से क्रूस के ऊपर दिखाया गया था जब यीशु ने अपनी आत्मा को परमेश्वर पिता को सौंप दिया था (लूका 23:46)। यहां पर ज़ोर फिर से मसीह के मनुष्य होने पर है।

यशायाह 8:18 को उद्धृत करते हुए लेखक ने कहा, ''**देख, मैं उन लड़कों सहित जो परमेश्वर ने मुझे दिए।**'' यह भविष्यद्वाणी की दोहरी प्रासंगिकता का एक और मामला लगता है क्योंकि निश्चित रूप में यह पहले यशायाह के बच्चों की बात थी।[32] जिस प्रकार से दाऊद की पंक्ति में हर राजा मसीह के पद को दिखाता था उसी प्रकार से हर वास्तविक भविष्यद्वक्ता मसीह के भविष्यद्वाणी वाले पद को दिखाता था।

मसीह के ''लड़के'' या ''बच्चे'' होना नये नियम में इब्रानियों की पुस्तक में विशेष उपयोग है। यशायाह 53 ने कहा था कि दुखी सेवक की कोई ''पीढ़ी'' (आयत 8) नहीं होनी थी। पर नबी ने आगे कहा कि वह अपना ''वंश देखने पाएगा'' (आयत 10)। अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के समय से मसीह ने कलीसिया में अपनी संतान को देखा है। जो लोग ''लड़के'' या ''संतान'' बन गए हैं उन्हें मसीह के साथ परमेश्वर में भरोसा रखना चाहिए। मसीह परमेश्वर ने उसके बच्चों की बातें करता रहता है। वह स्वर्ग में हमारे मध्यस्थ के रूप में पिता के सामने हमारा प्रतिनिधित्व करता है (इब्रानियों 7:25) और हम पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व करते हैं।

जिस ढंग से पुराने नियम के उद्धरणों का इस्तेमाल इब्रानियों में किया गया है वह उनके वास्तकिव संदर्भ से निकालता नहीं है। क्योंकि वह पूरी तरह से पवित्र शास्त्र के बड़े संदर्भ के साथ मेल खाते हैं। इब्रानी मसीही लोगों के नाम जो पुराने नियम से अच्छी तरह परिचित थी लिखने में प्रभावी होना आरम्भ करने में भी लेखक को पवित्र शास्त्र का इस्तेमाल बड़े ध्यान से यानी ऐसे करना जिससे उसके यहूदी भाई स्वीकार करते आवश्यक था। इन पहले उद्धरणों के सम्बन्ध में ब्रूस ने लिखा है कि यह ''सी. एच. डॉड के शोधपत्र का अच्छा नमूना है कि नये नियम में पुराने नियम के मुख्य उद्धरण प्रमाण के अलग वचन नहीं हैं बल्कि अर्थ के साथ अपने संदर्भ को लेकर चलते हैं।''[33]

हमारे जैसा बन कर रहने और हमारे स्थान पर मृत्यु का स्वाद चखने के लिए अपने आपको

नम्र करके मसीह ने हमारे लिए परमेश्वर के पुत्रों और वारिसों के रूप में गोद लिया जाना सम्भव बना दिया। मृत्यु पर विजय पाकर उसने अनन्त जीवन को हमारी पहुंच में कर दिया। मसीही बनने पर हमें मसीह के भाई बनाया जाता है और उसकी कलीसिया के पवित्र किए हुए लोग बनाया जाता है। आइए हम पिता में पूरे भरोसे के उसके नमूने को मानते हुए उसके लिए जीने का ठान लें, जो हमारे लिए मरने को तैयार था।

दुख उठाने वाले मसीह का ऊंचा किया जाना (2:14–18)

2:14–16

[14]इसलिए जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। [15]और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले। [16]क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं, वरन अब्राहम के वंश को संभालता है।

यीशु के विषय में पूछे जाने वाले सबसे बड़े प्रश्नों में से एक यह है कि यीशु मनुष्य क्यों बना? 2:14–18 में हम इस प्रश्न के तीन मर्मस्पर्शी उत्तर मिलेंगे।

आयत 14. परमेश्वर की इच्छा थी कि मसीह और उसके **लड़के** एक परिवार बन जाएं और स्वभाव में साझी हों, इस कारण मसीह के लिए मृत्यु तक मानवीय जीवन का अनुभव होना आवश्यक था। उसने पूरी तरह से हमारे जैसा बनने के लिए मानवीय स्वभाव को अपना लिया। **भागी** ''सहभागिता'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द *koinōnia* से लिया गया है।

NIV में कहा गया है, ''क्योंकि बच्चों में मांस और लहू होता है इसलिए उसमें भी उनके मनुष्य होने में सांझ की। ...'' ''होता है'' और ''सांझ की'' दोनों क्रियाएं दो अलग-अलग बलों को दिखाती है। पहली ''मनुष्यजाति के अन्त तक मनुष्यों में सांझ होने की सामान्य प्रकृति को चिह्नित करती है'' और दूसरी ''मनुष्य होने की स्वैच्छिक स्वीकृति'' को दिखाती है।[34] एक आरम्भिक ''मसीही'' विधर्म पीड़ाभासवाद में सिखाया जाता था कि यीशु केवल मनुष्य होने के लिए *प्रकट हुआ* और वास्तव में मांस और लहू में भागी नहीं हुआ। पीड़ाभासवाद के लिए अंग्रेजी शब्द ''docetism'' यूनानी भाषा के शब्द *dokeō* से निकला है जिसका अर्थ है ''लगना।'' इब्रानियों की पुस्तक यह दिखाते हुए कि उसकी परीक्षाएं वास्तविक थीं पक्के तौर पर इस विचार का खण्डन करती हैं'' (4:14–16; 5:8)।

हो सकता है कि हमें पता न चले कि **मृत्यु पर शक्ति** क्या है परन्तु हम इतना जानते हैं कि यह लोगों को परमेश्वर से अलग करती है। शैतान ने पाप के लिए उकसाया और पाप से मृत्यु आती है (रोमियों 6:23; इफिसियों 2:1)। जब हम पाप करते हैं तो आत्मिक रूप में हम मर जाते हैं, परन्तु इस आयत के संदर्भ में मृत्यु शारीरिक लगती है। शैतान अंधकार और मृत्यु के इलाके का राजा है (देखें कुलुस्सियों 1:13, 14)। शैतान की पराजय यीशु के पुनरुत्थान के द्वारा आई, जिसका उल्लेख इस पत्री में केवल अन्तिम गुणानुवाद में किया गया है (13:20), चाहे इसका संकेत 6:1, 2 में है।

शैतान की इस शक्ति को नष्ट करने के इसी उद्देश्य के लिए ''वचन देहधारी हुआ'' (यूहन्ना 1:14) अनुवादित शब्द **निकम्मा कर दे** *katargeō* का अर्थ ''मिटा देना'' है, जैसा कि KJV के अनुवाद ''नष्ट करना'' से सुझाव मिलता है। बल्कि इसका अर्थ ''बेकार कर देना'' या ''शून्य पर ले आना'' है। शैतान की शक्ति के लिए यूहन्ना ने यही कहा। 1 यूहन्ना 3:8 हमें बताता है कि ''परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।'' केवल यीशु ही सिद्ध जीवन जीने के योग्य था और वही शैतान के उद्देश्य को पराजित कर सकता था। उसने अपने जीवन और परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा शैतान को बांध दिया (मत्ती 4:1–11)। उसे दुष्ट आत्माओं को निकालने से पहले शैतान को बांधना आवश्यक था (मत्ती 12:22–29)। शैतान का अन्तिम निकाला जाना भी बांधे जाने के रूप में दिखाया गया है। प्रकाशितवाक्य 20:7–10 उसका अन्तिम निकाला जाना लगता है क्योंकि तब उससे ''आग और गंधक की झील में डाल दिया जाएगा।''

बड़ा विरोधाभास यह है कि यीशु ने मृत्यु के लिए अपने आपको संवेदनशील बना दिया ताकि वह इस पर विजय पा सके।[35] केवल मसीह यीशु में होने पर ही हमें शैतान, मृत्यु और कब्र के ऊपर विजय मिलती है (1 कुरिन्थियों 15:55–58)।

आयत 15. मृत्यु का भय प्रभावशाली है इसके कारण मनुष्य कई ऐसे काम करेंगे जो किसी दूसरे के कारण नहीं कर सकते। बड़े विश्वास वाली कई शूरवीर आत्माएं अपमान से पहले मृत्यु को स्वीकार कर लेंगी, परन्तु अधिकतर के लिए ''मृत्यु का भय'' दबाव का ज़बर्दस्त हथियार है। यदि मसीह ने हमारे अन्दर से इसे निकाल दिया तो कोई भी हमें भय या मृत्यु की धमकी के द्वारा बुराई करने के लिए हमें सफ़लता पूर्वक धमका नहीं सकता।

छुड़ा *apallaxēi* है जिसका इस्तेमाल केवल लूका द्वारा कहीं और हुआ है। लूका 12:58 में इसका अनुवाद ''छूटने का'' और प्रेरितों 19:12 में ''निकल'' हुआ है। इस शब्द का अर्थ ''पाप से मुक्त करना'' जैसे ''प्रायश्चित के द्वारा'' है। यदि किसी का विश्वास इतना मज़बूत है कि वह मृत्यु के आतंक पर विजय पा ले तो इससे उसे उद्धार दिलाने वाले विश्वास का बड़ा आश्वासन मिलता है। मसीह के साथ एक होकर मृत्यु की नदी के पास आने वाले को इससे भय खाने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में कोई मृत्यु रहेगी ही नहीं: ''वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे'' (लूका 20:36)। मार्टिन लूथर ने कहा था, ''जो मृत्यु से डरता है या मरने को तैयार नहीं है, वह पूरी तरह से मसीही नहीं है। यही कारण है कि ऐसे लोगों का पुनरुत्थान में विश्वास कम है और वे इस जीवन को आने वाले जीवन से अधिक प्रेम करते हैं।''[36]

क्रिसोस्टोम ने अपने समय के मसीही जनाज़ों में दिखाए जाने वाले तीखे सार्वजनिक विलापों की आलोचना की:

> जब मैं सार्वजनिक स्थानों में विलाप, इस जीवन से विदा हो चुके लोगों पर चीख पुकार, चिल्लाहट और अन्य सब प्रकार के अनुचित व्यवहार को देखता हूं तो मुझे काफिरों और यहूदियों और विधर्मियों के सामने जो इसे देखते हैं शर्म आती है, और वास्तव में उन सब के सामने जो मज़ाक के लिए हम पर इस कारण हंसते हैं। ... परमेश्वर हमें शक्ति दे कि

आप इस जीवन से बिना चीख चिल्लाहट के विदा हों![37]

उसका मानना था कि किसी प्रियजन की मृत्यु पर गमहीन होकर रोने का दिखाने से लोग अविश्वासी हो जाते हैं।

आलबर्ट बार्नस ने दो कारण सुझाए कि परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए मृत्यु के भय की योजना क्यों बनाई। पहला, भय लोगों को मृत्यु के लिए तैयार करता है। यदि हमें मरने की कोई चिंता ही न होती तो हम आवश्यक तैयारी नहीं कर पाते। दूसरा भय लोगों को आत्महत्या करने से रोकता है। निराशा से मृत्यु का भय न रखने वाले लोग अपनी जान ले सकते हैं।[38] बेईमान और आज्ञा न मानने वालों को "दूसरी मृत्यु" का भय होता है (प्रकाशितवाक्य 20:14, 15; 21:8)।

मसीही व्यक्ति को मृत्यु का भय न रखने के लिए मज़बूत विश्वास कैसे सहायता करता है? पहले तो यह ऊपर एक घर का आश्वासन देता है (2 कुरिन्थियों 5:1)। दूसरा यह मृत्यु के डंक को खत्म करता है (1 कुरिन्थियों 15:54, 55)। तीसरा, यह अनन्तकाल में विश्वास देता है जो पृथ्वी के इस जीवन से "बहुत ही अच्छा है" (फिलिप्पियों 1:22, 23)।

पुराने नियम में अधीन रहते हुए यहूदी लोग कभी इस भय से निकले नहीं थे। *द मिद्रास* में कहा गया था: "इस जीवन में मृत्यु मनुष्य को कभी आनन्द नहीं देगी।"[39] यूनानी नाटककार यूरीपाइडज़ (लगभग 485–406 ई.पू.) ने लिखा है कि कोई भी मनुष्य वास्तव में गुलाम नहीं हो सकता यदि उसे मृत्य का भय न हो।[40] यीशु ने अपने पुनरुत्थान के द्वारा सारी मनुष्य जाति को ऐसी गुलामी से उठा लिया। वह कब्र से जी उठा था, इस कारण हम जानते हैं कि हम भी जी उठेंगे!

आयत 16. वह तो स्वर्गदूतों को नहीं सम्भालता है मूल में "वह स्वर्गदूतों को नहीं पकड़ता" है। यह वही क्रिया शब्द है जिसका इस्तेमाल इब्रानियों 8:9 में हुआ है जहां परमेश्वर "[इस्राएलियों] का हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया।" वह सहायता करने के विचार से "पकड़ता" है। रिचर्ड फ्रांसिस वेमाउथ का अपने अनुवाद में सही विचार था: "निश्चित रूप में वह निरन्तर सहायता करने वाला हाथ स्वर्गदूतों तक नहीं बल्कि अब्राहम की संतान तक पहुंचाता है।" यीशु ने किसे "पकड़ा"? उसने हमारे "मानवीय स्वभाव" को पकड़ा "और इसे अपना" बना लिया; इसलिए फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस ने इसे मसीह के देहधारी होने पर एक मज़बूत वचन माना।[41]

यीशु लोगों जिन्हें यहां **अब्राहम के वंश** कहा गया है की सहायता करने के लिए एक मनुष्य के रूप में रहा। यह अभिव्यक्ति केवल यहूदियों के लिए नहीं बल्कि उन सब के लिए है जो विश्वास परमेश्वर की संतान बनते हैं। पुरानी वाचा के अधीन विश्वासियों को "हमारी बिना" सिद्ध नहीं किया गया था (11:40)। यह अवधारणा पौलुस की भी है क्योंकि गलातियों 3:7, 26–29 में "जो विश्वास करने वाले हैं" उन्हें "अब्राहम की संतान" कहा गया है। पौलुस द्वारा ज़ोर दी गई मुख्य सच्चाई यह है कि "विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान" वे लोग हैं जिन्होंने "मसीह में बपतिस्मा लिया है" (गलातियों 3:26, 27)। सब मसीही लोग विश्वासियों के पिता अब्राहम के आत्मिक वंश हैं।

आयत 16 वह अन्तिम आयत है जिसमें इस बात की चर्चा है कि स्वर्गदूत मसीह से कम

हैं और स्वर्गदूतों के द्वारा आशिषें उन आशिषों से कम हैं जो मसीह में हमें मिलती है, चाहे 13:2 में फिर से स्वर्गदूतों की बात की गई है। यह इस बात को दोहराने के लिए नहीं है कि मसीह ने मानवीय रूप धारण किया बल्कि यह कारण देने के लिए है कि उसने ऐसा क्यों किया। उसे स्वर्गदूतों की सहायता करने की परवाह नहीं थी और न ही वह स्वर्गदूतों को छुड़ाने के लिए आया, बल्कि हमारी सहायता के लिए आया। उन्हें स्वर्ग की सारी सुविधाएं हैं, इसलिए हमें लगेगा कि स्वर्गदूतों को उसकी सहायता की आवश्यकता नहीं है। परन्तु यदि उन्होंने पाप किया है तो उन्हें उससे अधिक सहायता की आवश्यकता है जो उसने देने की पेशकश की है (2 पतरस 2:4)। जिन स्वर्गदूतों ने पाप किया उन्होंने ऐसा पूरी तरह से जानते हुए किया होगा कि वे क्या कर रहे हैं, जबकि मनुष्य के साथ छल हुआ था। इसी कारण मानवीय विश्वासी को क्षमा की आशा की पेशकश की गई है। ''यदि वह कोई स्वर्गदूत होता ..., तो यीशु ने स्वर्गदूतों की सहायता की होती; परन्तु वह मनुष्यों की सहायता करता था इस कारण वह स्वर्गदूत नहीं हो सकता था।''[142]

2:17, 18

[17]इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबंध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे। [18]क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।

आयत 17. मसीह के लिए अब्राहम की संतान की सहायता करने के लिए **चाहिए था कि** हमारे **समान बनें**। वह **सब बातों में** (''हर प्रकार से''; NRSV) हमारे जैसा बन गया। उसने हर प्रकार से, जैसे हम दुख उठाते हैं दुख उठाया (4:14, 15)। उन परीक्षाओं पर ध्यान करें जिनका उसने सामना किया: निर्धनता की परीक्षाएं, साथी मनुष्यों से, यहां तक कि अपने भाइयों और माता से परीक्षाएं; अपने मित्रों की ओर से भली मंशा से किए गए आग्रह; शैतान की परीक्षाएं; वे परीक्षाएं जों शारीरिक पीड़ा से आईं और परमेश्वर द्वारा त्याग दिए जाने की परीक्षाएं। ''तुलना करते हुए हम ने परीक्षा के काले समुद्र की सतह को ही देखा है। यीशु इसकी गहराइयों में डूब गया है। वह सब कुछ जानता है। वह शैतान को हमारे जीवनों में डांट लगाता है।''[143] दुख उठाने के बाद वह सचमुच में हमारे साथ सहानुभूति करता है; वह सिद्ध मध्यस्थ है। उसने यह सब हमारा **दियालु और विश्वासयोग्य महायाजक** बनने के लिए किया।

पवित्र शास्त्र में मसीह के लिए सीधे तौर पर यहां पर पहली बार, ''महायाजक'' यहूदी महायाजकाई इस पुस्तक के लिखे जाने के समय भी मसीह की भूमिका के ज़दर्बस्त ज़ोर और महत्व के होने के लिए विद्यमान होगी। यहूदी मत में उस सजीव प्रभावशाली स्थिति के आकर्षण कुछ लोगों को पुरानी वाचा की ओर खिंचते रहते होंगे।

हमारे महायाजक के रूप में सेवा करने का मसीह का पूरा काम **लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित** करने का था। ''प्रायश्चित'' ''मेल'' (KJV) या ''प्रायश्चित'' (NIV) है। यहूदी महायाजक उस बलिदान के द्वारा जो उस ने चढ़ाया होता था, सांकेतिक कार्य के द्वारा जाता

था, पश्रन्तु उसका काम वास्तव में पाप को मिटा नहीं सकता था। उस की स्थिति रस्मी अधिक थी। जैसे पवित्र वस्तुओं का पहनना, हारून का उत्तराधिकारी होना और पहली सदी में, देश के न्यायिक मामालें में भी भाग लेना, ये सब मसीह के उससे बड़े काम की पूर्व कल्पना ही थी।

''प्रायश्चित'' का अनुवाद *hilaskomai* से हुआ है। यूनानियों द्वारा इस शब्द का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया जाता था कि उन्होंने अपने देवताओं के कोप को कम करने की कोशिश की, ऐसा विचार है, जो नये नियम के बाहर का है। LXX में वाचा के संदूक के ढकने अर्थात ''प्रायश्चित का ढकना'' जिस पर प्रायश्चित के दिन पापबलि का लहू छिड़का जाता था के लिए इस्तेमाल हुआ है (निर्गमन 25:16-22)। परमेश्वर मसीह की मृत्यु में अपनी ही शर्तों को पूरा कर रहा था।[44] उसके दुख उठाने का विचार प्रभावशाली ढंग से फिलिप के अनुवाद में दिखाया गया है: ''परीक्षा के अधीन उसके अपने ही दुख उठाने के गुण के द्वारा। ...''

वर्ष में एक बार महायाजक लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करने के लिए पवित्र स्थान में प्रवेश करता था। कहा जाता है कि पहली सदी में पवित्र नाम ''याहवेह'' केवल योम किपुर (प्रायश्चित के दिन) पर बोला जाता था। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इसका सही उच्चारण खो चुका है! ''यहोवा'' नाम केवल मिश्रित शब्द है जिसे आम तौर पर सही उच्चारण के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता।

इस पत्री का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि यहूदी महायाजक यीशु से कम था पर था उसके जैसा ही, जिसने हमारे लिए छुटकारा उपलब्ध कराया। मसीह में हम ''परमेश्वर की धार्मिकता बन'' जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:18-21)। पापों के प्रायश्चित के माध्यम के रूप में उसका देहधारी होना आवश्यक था।[45] इसके लिए मनुष्यों में से किसी महायाजक के द्वारा दिए जा सकने वाले पाप के प्रायश्चित के लिए बड़े बलिदान की आवश्यकता थी।

जब तक हमने जो किया हो उसके लिए शर्मिंदा होने के लिए क्षमा नहीं पाते हैं तब तक उसका जो यीशु ने किया है प्रभाव हमें वैसे प्रभावित नहीं कर सकता, जैसे इसे करना चाहिए। चाहे मसीह हमारे लिए मरे बिना हमारी स्थिति को समझ सकता था पर हमें उसके आए बिना हमारे लिए उसकी सहानुभूति में विश्वास करना कठिन होना था। ''एक तस्वीर हज़ार शब्दों से अधिक कह देती है; परन्तु एक प्रदर्शन 10,000 शब्दों से अधिक कह देता है। इसलिए यीशु को पृथ्वी पर आना पड़ा।''[46] उसने हमारे सब क्लेशों को उठाकर अपने प्रेम को दिखा दिया। इसलिए उसे मालूम है कि जब हम परीक्षा में पड़ते हैं तो हमारी कैसे सहायता करनी है। उस के पास सहायता करने के लिए और भी तरीके थे, परन्तु अब वह हमारे साथ सहानुभूति के लिए बेहतर ढंग से योग्य है।

आयत 18. ''सहायता कर सकता है'' के लिए शब्द, *boētheō* का अर्थ ''आवश्यकता पड़ने पर सहायता लाना'' हो सकता है।[47] ''विश्वासयोग्य'' और '' महायाजक'' को ''फंसे हुए'' शब्द कहा गया है, जो इन आयतों को 3:1, 2 में अगली आयतों के साथ जोड़ते हैं।[48]

मसीह उनकी सहायता करता है जिनकी **परीक्षा** होती है। इस पत्र के प्राप्तकर्त्ता पर यहूदी मत में लौटने की बड़ी परीक्षा आई होगी, परन्तु उन्हें वापस न जाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्हें बताया गया कि अपने सारे स्वर्गीय महिमा में उनका महायाजक उनके लिए सिफ़ारिश करने के लिए परमेश्वर के सामने था (इब्रानियों 7:25)। इससे भी अधिक प्रोत्साहित करने वाला यह

ध्यान था कि वह हमारी ही तरह परखा गया था। जितना हम इस तथ्य पर भरोसा करेंगे उतना ही हमारा विश्वास होगा!

यीशु एक समय के लिए हमारे साथ मनुष्य बना ताकि वह हमारे सिद्ध महायाजक का काम कर सके। उसे बहुत पहले परीक्षा और दुख उठाने की शारीरिक समझ पाने के लिए स्वर्गदूतों से थोड़ा कम किया गया था। अपनी सृष्टि के भाग के रूप में रहकर और फिर मरकर वह मृत्यु के बंधनों को तोड़ सकता था। सांसारिक परीक्षाओं यहां तक कि हमारी ओर से क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए उसकी तैयारी हमारे लिए उसके अद्वितीय प्रेम की पूर्ति करता है। उस प्रायश्चित के बिना जो उसने दिया हम कितने खोए हुए होते!

और अध्ययन के लिए:
शैतान

यीशु "मृत्यु के द्वारा" शैतान को नष्ट करने के लिए आया (आयत 14)। स्पष्टतया यह विनाश शैतान की कुछ "शक्तियों" का था। इस प्रकाशन के दिए जाने तक शैतान को "मृत्यु का दूत" कहा जाता होगा। परमेश्वर और शैतान के बीच निर्णायक युद्ध क्रूस के ऊपर हुआ।[49] यह निश्चय ही यीशु के आने का मुख्य कारण था जिसमें शैतान की शक्ति को तोड़ दिया गया। इस संसार में शैतान की बची हुई शक्ति के लिए हम उसे अधिक श्रेय न दें क्योंकि मसीह ने उसे हरा दिया है![50] "शैतान और इबलीस" (दोनों का अर्थ "आरोप लगाने वाला," इब्रानी, यूनानी [और हिन्दी-अनुवादक] में एक ही नाम; प्रकाशितवाक्य 20:2) ने मनुष्यजाति के साथ छल किया जिससे मृत्यु आई जो पाप का परिणाम थी।[51] वास्तव में वह हर सम्भव ढंग से कपटी है; वह झूठा है। वह शिकार की खोज में दहाड़ते हुए शेर के जैसा है जो तलाश में रहता है कि किसे फाड़ खाए (1 पतरस 5:8); परन्तु वह वास्तविक "यहूदा का सिंह" नहीं है वह सिंह तो मसीहा है (प्रकाशितवाक्य 5:5)।

यहूदियों का मानना था कि मृत्यु का कारण शैतान है न कि परमेश्वर। यीशु ने शैतान के लिए कहा, "वह तो ... सत्य पर स्थिर न रहा," जिसका अर्थ यह है कि वह किसी समय इसमें था। वह आरम्भ से "झूठा" और "हत्यारा" है। जो मनुष्यों को पाप में छलता और मृत्यु का कारण बनता है (यूहन्ना 8:44)। "शैतान का सा दण्ड" (1 तीमुथियुस 3:6) वाक्यांश उस दण्ड के लिए नहीं हो सकता जो शैतान किसी के ऊपर डालता है, क्योंकि इसमें संदेह है कि उसके पास वह शक्ति होगी। इसके बजाय इन शब्दों का अर्थ यह हो सकता है कि घमण्ड के कारण "वह दण्ड जिसमें शैतान गिरा।" हमारी मृत्यु का कारण वह केवल परोक्ष रूप से है।

पतरस ने कहा कि स्वर्गदूतों को जब उन्होंने पाप किया "नरक में भेज दिया गया" (2 पतरस 2:4)। स्पष्टतया स्वर्ग में से निकाले जाने के बाद शैतान ने सफलतापूर्वक मनुष्य को गिरने का कारण बना। परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया, हम कह सकते हैं। परन्तु यह पक्का है कि शैतान के पास केवल उतनी ही शक्ति हो सकती है जितनी परमेश्वर उसे देता है (अय्यूब 1:12; 2:6)। परमेश्वर ने मनुष्य को परखने और उसे मज़बूत बनाने के लिए शैतान की गतिविधि होने दी हो सकती है, क्योंकि जब किसी परीक्षा का सामना किया जाता है तो यह व्यक्ति को और बेहतर बना देता है जो परमेश्वर की महिमा और अधिक कर सकता है (जैसे अय्यूब के

जीवन में बाद में हुआ)। शैतान के सुझाव के कारण मनुष्यजाति आत्मिक और शारीरिक रूप में मर गई। एक अर्थ में इससे शैतान को मनुष्यों पर नियन्त्रण मिल गया और वह संसार का हाकिम बन गया (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; देखें 2 कुरिन्थियों 4:4)। मनुष्य शैतान का असली गुलाम बन गया (यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:16)।

प्रासंगिकता

दूर चले जाने का कारण क्या होता है? (2:1-4)

दूर चले जाने का खतरा कई प्रकार से हो सकता है। *कइयों को उस सच्चाई का जो उन्होंने सीखी है महत्व पूरी तरह से समझ नहीं आता।* जब सच्चाई को जानने का द्वार खुला होता है, जो हमारे प्राण को बचा सकता है, तो कई लोग इसे अपने प्रतिदिन के जीवन के लिए अनावश्यक जानकर परे कर देते हैं। यह तरीका खतरनाक है। पौलुस ने धार्मिकता, संयम और आने वाले न्याय का तर्क देकर अपने सामने आई धमकी के लिए फेलिक्स को चेतावनी दी (प्रेरितों 24:25)। फेलिक्स ने ऐसे मामलों पर बात करने के लिए कोई और उपयुक्त समय चाहा। "उपयुक्त" समय कभी नहीं आता है। पाप से मन फिराने की आवश्यकता कभी आसान या अचानक नहीं होती। हमें बाहरी पापियों को आने वाले न्याय को याद दिलाने के हर अवसर का इस्तेमाल करना चाहिए। पौलुस ने आने वाले न्याय का इस्तेमाल लोगों को आज्ञा मानने के लिए समझाने के आधार के रूप में किया। उसे मालूम था कि न्याय का दिन आ रहा है और प्रभु से डरने का यही कारण है (2 कुरिन्थियों 5:10, 11)।

दूर जाने का एक कारण यह सोचना है कि हमें नई वाचा के अधीन अधिक पाप से क्षमा मिल सकती है। हम पुरानी वाचा के अधीन दिए जाने वाले दसमांश को पढ़ते हैं और सोचते हैं, "अच्छा है मुझे उस कठोर प्रबन्ध में नहीं रहना है और इतना अधिक नहीं देना पड़ता" वास्तव में नये नियम के अधीन हमारी ज़िम्मेदारी और भी अधिक है; संसार को सुसामचार सुनाने के लिए यहूदी प्रबन्ध को बनाए रखने से बढ़कर अधिक उदारता की आवश्यकता है। कुछ लोग संत बनकर बिना कुछ किए सफल बनकर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। यीशु ने "दो कोस चला" जाने के आनन्द की शिक्षा दी (देखें मत्ती 5:41)। उसने यह भी सिखाया कि जब हम वह सब करते हैं जिसकी हमें आज्ञा दी गई है तो हम उसके बावजूद "निकम्मे दास" ही हैं (लूका 17:10)।

हम इस जीवन के आनन्दों की ओर आसानी से आकर्षित हो जाते हैं जो दूर जाने का सबस बढ़ा कारण हो सकता है। हमारे मन आसानी से "चिंता, और धन, और जीवन के सुखविलास में फंस" ते हैं। जिससे "उनका फल नहीं पकता" (लूका 8:14)। हम कई जवानों को देखते हैं जो बड़े आत्मिक जोश के साथ आरम्भ करते हैं, परन्तु जो कभी विश्वास की गहराई तक नहीं पहुंच पाते। वे बिना इस समझ के दूर हो जाते हैं, आम तौर पर अपने प्राणों की अनन्त हानि तक। जब आनन्द हमें परमेश्वर से दूर ले जाए तो हम निराशाजनक ढंग से उससे जो महत्वपूर्ण है, खो जाते हैं। हम सोचने लगते हैं, "मेरे पास समय नहीं है" और उस आनन्द को सही ठहराने के लिए जो हमारे आकर्षण का कारण बन गया है, बहाने बनाते हैं।

सुसमाचार उद्धार के लिए सामर्थ बना रहता है (रोमियों 1:16)। जिस प्रकार से नन्हे बालक को साफ़ करने के लिए शरीर पर साबुन मला जाना आवश्यक है, वैसे ही पाप धोने के लिए सुसमाचार आवश्यक है। बाइबल में भरपूर सच्चाई संसार का उद्धार कर सकती है; परन्तु जिस प्रकार से दवा तब तक चंगाई नहीं दे सकती जब तक इसे लिया नहीं जाता, वैसे ही सुसमाचार तब तक किसी का उद्धार रहीं कर सकता, जब तक इसे सुनकर माना नहीं जाता।

पाप क्या है (2:1, 2)

पुराने नियम में लालच के लिए मृत्यु का एक उदाहरण आकान है (यहोशू 7), और नये नियम में हनन्याह और सफीरा एक दम्पत्ति जिसे ऐसा ही परिणाम मिला (प्रेरितों 5)। पाप परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा का उल्लंघन है। 1 यूहन्ना 3:4 में ''व्यवस्था का विरोध'' का अर्थ व्यवस्था का विरोध करना या इसे ''तोड़ना'' है। शब्द *anomia* जिसका मूल अर्थ ''व्यवस्था का विरोध'' है। बहुत से मसीही लोग जो गिर गए हैं उन्हें घोर नैतिक उल्लंघनों के लिए दण्ड नहीं मिलेगा बल्कि उसकी उपेक्षा करने के लिए मिलेगा जो उन्हें करना चाहिए था। अनन्त उद्धार को पक्का करने के लिए 2 पतरस 1:5–11 वाले ''मसीही अनुग्रहों'' को जोड़ना आवश्यक है। जब कोई ऐसा करता है तो वह ''कभी भी ठोकर न'' खाएगा (आयत 10)। इसलिए अनुग्रह से कभी न गिरना तभी सम्भव है यदि पतरस द्वारा बताई गई शर्तों को माना जाए। अपने विश्वास में ''सदगुण'' (आयत 5), और इस प्रकार से सूची में दिए सभी गुणों को जोड़ते हुए सही दिशा में पढ़ा जा सकता है।

एक पवित्र लोग द्वारा पाप (2:1–4)

वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने एक प्रचार की बात बताई जिसने ''पवित्र लोगों के पापों'' पर प्रवचनों की एक शृंखला दी। उसे कलीसिया के एक सदस्य द्वारा बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया। ''आखिर,'' सदस्य ने कहा, ''मसीही व्यक्ति के जीवन का पाप अन्य लोगों के जीवनों के पाप से अलग है।'' ''हां,'' सेवक ने उत्तर दिया, ''यह उससे भी बुरा है!''[52]

हम कैसे बचेंगे? (2:3)

2:3 का प्रश्न बेतुका है, जिसका अर्थ यह है कि इसका उत्तर तो उसी में है: *यदि हम इतने बड़े उद्धार की उपेक्षा करते हैं तो कोई बचाव नहीं है!* उत्तर साफ़ 2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9 में दिया गया है। कुछ लोगों के मन इतने कठोर हो जाते हैं कि वे छुटकारे की सम्भावना से आगे निकल जाते हैं। इब्रानियों 6:4–6 और 10:26–29 के अपने अध्ययन में हम पाएंगे कि ऐसा ही है। 1 तीमुथियुस 4:1–3 में पौलुस ने सुझाव दिया कि कुछ लोगों का ''विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागे'' गए हों और वे सच्चाई के बजाय झूठ बताएंगे। जिस प्रकार से मवेशी के ऊपर लगी मोहर उसके खाल के बालों को बढ़ने से रोकती है उसी प्रकार से विवेक यहां तक दागा गया हो सकता है कि सच्चाई का उस पर कोई असर न हो। एक कवि ने लिखा है:

एक समय है, पता नहीं कब,
एक बिन्दु है, पता नहीं कहां,

जो महिमा हो या निराशा के लिए
लोगों के भाग्य को तय करता है,
हमारे लिए अदृश्य एक रेखा है,
परमेश्वर की उपस्थिति और
उसके क्रोध के बीच छुपी हुई सीमा के
हर पथ को पार कर लेती है।[53]

इब्रानियों 6:4-6 सुझाव देता है कि इस रेखा को किसी विश्वास को त्यागने वाले के द्वारा लांघा जा सकता है। इब्रानियों 10:25-29 में संकेत है कि इसका आरम्भ आराधना की अनदेखी के साथ हो सकता है और ऐसा मन बढ़ाने के "जान-बूझकर पाप करने" के द्वारा जारी रह सकता है जिसमें "परमेश्वर के पुत्र को पांवों तले रौंदा" है। "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (10:31)। ऐसी आयतें हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि पौलुस ने क्यों कहा कि "प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं" (2 कुरिन्थियों 5:10, 11)। हम अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर नहीं रह सकते यदि हम अविश्वासी हैं। हमें छोड़ देने के खतरे से अवगत होना आवश्यक है जो न केवल इस जीवन में निराशा का बल्कि अनन्तकाल तक दोषी होने की सम्भावना का कारण भी बनता है।

आश्चर्यकर्म अनावश्यक हैं

आश्चर्यकर्म बन्द हो गए हैं; संदेश के पूरी तरह से पक्का हो जाने पर वे अनावश्यक हो गए। मरकुस 16:20 घोषणा करता है कि पक्का होने की प्रक्रिया अतीत में पहले ही पूरी हो गई थी। आश्चर्यकर्म मसीही लोगों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नहीं थे। यही कारण हो सकता है कि तीमुथियुस को अपने पेट की बीमारी के लिए "थोड़ा थोड़ा दाखरस" इस्तेमाल में लाना पड़ा था (1 तीमुथियुस 5:23)। हम प्रेरित से पूछते, "हे पौलुस, तू जवान तीमुथियुस को आश्चर्यकर्म से चंगा क्यों नहीं करता?" पौलुस को त्रुफिमुस को बीमार होने पर मिलेतुस में छोड़ना पड़ा था (2 तीमुथियुस 4:20)। क्या हम पौलुस को इस काम के लिए डांट लगाएं?

आज ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो तुरन्त किसी घाव को चंगा कर सके। यह तो आश्चर्यकर्म होगा।

विश्वास की प्रार्थना

ध्यान दें कि आज मसीह की सामर्थ से चंगाई देने का दावा करने वाले बहुत से प्रचारक अपने आपको बीमारों के लिए प्रार्थना करने के लिए अपने "पास्टर" (एकवचन) को बुलाएंगे "प्राचीनों" (बहुवचन) को नहीं। याकूब ने प्राचीनों और ऐल्डरों की प्रार्थना और विश्वास से जिन्हें चंगाई का आत्मिक दान मिला हो, चंगाई की गारंटी दी (1 कुरिन्थियों 12:9; याकूब 5:14-16)। आज बीमारों को बताया जाता है, "यदि तुम्हारा विश्वास है कि तुम चंगे हो सकते हो।" परन्तु याकूब "विश्वास से की गई प्रार्थना" की बात कर रहा था जिसका अर्थ यह है कि प्रार्थना करने वाले का विश्वास होना आवश्यक है। एक प्रश्न है "परमेश्वर किसी अबोध बालक

को क्यों मरने देगा यदि विश्वास वाले लोग चंगाई देने के लिए उपलब्ध हैं, जब कि वह किसी को जिसने पाप में जीवन बिताया हो, चंगाई दे देता है?'' परमेश्वर के ढंग कई बार बेशक समझ से परे होते हैं, परन्तु पवित्र शास्त्र में आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य बता दिया गया है कि इनका उद्देश्य सुसमाचार की पुष्टि करना था ताकि इस पर विश्वास किया जाए और लोग अनन्त जीवन पाएं (यूहन्ना 20:30, 31)। पुष्टि करते रहने की आवश्यकता नहीं है।

याकूब 5 वाली स्थिति उस समय तक सीमित थी जब प्राचीनों के पास आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां थीं। आज हमारे बीच ऐसी शक्तियों वाला कोई प्राचीन या ऐल्डर नहीं है। तेल से अभिषेक करना आनन्द करने का प्रतीक हो सकता है क्योंकि आश्चर्यकर्म से चंगाई पक्की होनी होती थी। सम्भवतया अभिषेक करना, साफ़ करने, पहनने और किसी चंगाई के लिए जश्न मनाने के लिए खड़े होने का प्रतीक था। यह ''आनन्द का तेल'' हो सकता है (भजन संहिता 45:6, 7; इब्रानियों 1:8, 9 में उद्धृत)। मेज़ पर खाना और तेल से अभिषेक होना भजन संहिता 23:5 वाले आनन्द के अवसर के प्रतीक थे।

''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयग एक सा है'' (इब्रानियों 13:8) परन्तु इस तथ्य का अर्थ यह नहीं है कि वह आज भी ऐसे ही आश्चर्यकर्म करता है जैसे किसी समय वह करता था। किसी समय वह मनुष्य के बीच में चलता था परन्तु आज वह शरीर में हमारे बीच नहीं है। किसी समय पर परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया था परन्तु आज वह ऐसा सीधे तौर पर नहीं करता है। मसीह सदा से वही है, परन्तु वह सदा एक ही तरह से काम नहीं करता है।

लोगों के लिए परमेश्वर की चिंता (2:6-8)

जब हम इस तत्व पर विचार करते हैं तो हम चकित हो जाते हैं कि अपनी असीम महानता में परमेश्वर इस पृथ्वीनुमा बिल्लौर पर छोटे छोटे दीन लोगों की चिंता करता है! हब्बल दूरबीन और अन्य वैज्ञानिक प्रगतियों से हमें पता चल रहा है कि अंतरिक्ष कितना विशाल और समझ से परे है। हमारी अपनी सौर प्रणाली का केन्द्र तुलनात्मक रूप में छोटा सूर्य है। बताया जाता है कि हमारा सूर्य हमारी आकाशगंगा के केन्द्र से 35,000 प्रकाशवर्ष से अधिक दूर है। सारे संसार का सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर व्यक्तिगत रूप में हमारे छोटे से ग्रह पर आया।

सूर्य पर 2002 *न्यूज़वीक* पत्रिका में लिखा गया, ''गत वर्ष सूर्य से सबसे बड़ी [सौर्य चमक] निकली जिसे वैज्ञानिकों ने कभी नहीं देखा था।'' सौर्य प्रणालीं से ''ख़तरनाक रेडिएशन यानी रेडियोधर्मी किरणों के बड़े गोलों'' का ''इकट्ठे निकलना'' हुआ। लाखों मीलों तक आग की वह जीभ फैल गई। यह तो अच्छा हुआ कि हमारी सौर प्रणाली इतनी बड़ी है और पृथ्वी बहुत छोटी सी। वह आग हमारी ओर नहीं आई, परन्तु ऐसा नहीं है कि हर बार ऐसा ही हो। ''उसके सीधे टकराने से बिजली की कटौती, संचार साधनों में गड़बड़ी [अविश्वसनीय] उत्तर ध्रुवीय प्रकाश की तो बात ही न करो।'' लेखक ने माना कि ''इस से भी बड़ा खतरा हो सकती है,'' परन्तु माना कि ''अन्तर काफ़ी दूर है।''[154] यह कल्पना करना आसान है कि परमेश्वर किस प्रकार पृथ्वी का नाश करने के लिए ऐसे विस्फोट का इस्तेमाल कर सकता है (देखें 2 पतरस 3:10-13)। परमेश्वर वचन से बात करके संसार को नाश कर सकता है, परन्तु साथ ही वह हमें मन फिराने का अवसर देता है (2 पतरस 3:9)। संसार का नियंत्रण परमेश्वर के हाथ में है।

मन फिराने का समय (2:9, 10)

दुष्ट लोगों से मन कौन फिरवा सकता है? क्या AIDS जैसी लगभग अजय बीमारियां, जो मनुष्यजाति के अधिकतर लोगों को होश में लाने में सहायक होंगी? सितम्बर 11, 2001 के आतंकवादी हमले जिसने न्यू यार्क नगर के लोगों की जानें लीं, पैंटागन और पैन्सिलवेनिया के मैदान से लगा कि अमेरिकी लोग आत्मिकता में बहुत हद तक ऊंचे उठ गए हैं। आतंकवादियों के कामों की ऐसी और शृंखला से, या तूफ़ान या भूकम्प से होने वाली मृत्यु और विनाश से आसानी से एक बड़ी जागृति आ सकती है। ऐसी दुखद घटनाएं लोगों को जगाकर यह दिखा सकती हैं कि वे अपने आपको बचा नहीं सकते इसलिए उन्हें चाहिए कि वे केवल सच्चे और जीवते परमेश्वर की ओर लौट आएं! लूका 13:1–5 में यीशु ने लोगों को मन फिराने के लिए कहने के लिए दुर्घटना और जानबूझकर की कई मृत्यु दोनों का इस्तेमाल किया। उसने कहा कि मर जाने वाले लोग उन से अधिक बुरे नहीं थे जो जीवित रह गए थे; परन्तु उनकी मृत्यु हमारे लिए मन फिराने के लिए चेतावनी होनी चाहिए। हमें ऐसी वर्तमान घटनाओं का इस्तेमाल वैसे ही करना चाहिए जैसे यीशु ने किया।

क्षमा को सही ठहराना (2:9, 10)

यदि हो सकता तो परमेश्वर संसार के उद्धार के लिए अपने पुत्र की मृत्यु के अलावा कोई और रास्ता ढूंढ़ सकता था। परमेश्वर हमारे पापों की कीमत और कैसे चुका सकता था? पाप इतना भयानक, इतना घृणित और इतना बुरा है कि हम में से कोई भी अपने ही पापों में से एक की क्षमा पाने के लिए भी कीमत नहीं चुका सकता है।

मनुष्यजाति के लिए अपने प्रेम के कारण परमेश्वर ने पाप का कर्ज़ चुकाने का एक तरीका ढूंढ़ा इसके लिए सिद्ध बलिदान की पूरी कीमत देनी आवश्यक थी। केवल उसका पुत्र ही इस मानक पर पूरा उतर सकता था। वह पुत्र मसीह मानवीय रूप में अपने आपको लाने, पृथ्वी पर रहने और मनुष्यजाति के पापों के लिए मरने को सहमत हो गया। वह ऐसा बन गया "हमारे लिए पाप ... कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)।

मसीही प्रबन्ध के भीतर परमेश्वर के पास कर्ज़ चुकाने का तरीका है जिसके लिए सचमुच का बलिदान आवश्यक था। कई धर्म एक ऐसे परमेश्वर को मानते हैं जो अपराध की केवल कीमत ही नहीं मांगता हो बल्कि जो अटकल से तय कर सकता है कि कुछ लोग दोषी हैं जबकि दूसरे लोग पापों के बलिदान के बिना बचाए गए। इस प्रकार से उनके पास कोई सही धर्मशास्त्रीय प्रबन्ध नहीं है जो परमेश्वर की धार्मिकता को बनाए रखे। जो अधिक तर्कसंगत लगता है वह सही कीमत चुकाने की मसीही अवधारणा या वह परमेश्वर है जो केवल घोषणा करता है, "सब माफ़ हो गया क्योंकि मैं अच्छा हूं"? (देखें रोमियों 3:23–26.)

मसीह के दुख उठाने पर आपत्तियां (2:10)

यह तथ्य कि उनके मसीहा ने दुख उठाया और मर गया कई इब्रानी मसीही लोगों के लिए अपमान की बात थी। उन्हें यह पता होना आवश्यक था कि न केवल यह पवित्र शास्त्र के अनुसार था बल्कि उनके भले के लिए भी यह पूरी तरह से सही था। लोगों के लिए जिन्होंने सदियों से

यहूदियों के तरह दुख सहे हों अपने नये राजा में धन्यवाद देना और आनन्द करना स्वाभाविक होना चाहिए था जो उनके लिए वैसे ही दुख उठाने को तैयार था जैसे उन्होंने उठाए थे। परमेश्वर दूसरों की ओर से हृदयों को नरम करने और पापियों को अपनी ओर खींचने के किसी के काम करने की अपील को जानता था। यह सब ''बहुत से पुत्रों को महिमा में'' लाने (आयत 10) के इरादे से था, उस महिमा में जो सुलैमान की महिमा से कहीं बढ़कर है। परमेश्वर ने कभी केवल कुछ एक लोगों को बचाने की इच्छा नहीं की बल्कि उसने चाहा कि सब लोग मन फिराने के लिए आएं (1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9)। अपनी समझ से कोई यह कल्पना न करे कि वह खींचने वाले उस ढंग से बेहतर बना सकता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है (यूहन्ना 12:32)। सुसमाचार का प्रचार आज भी सब लोगों को अपनी ओर खींचने के लिए परमेश्वर का ढंग है (यूहन्ना 6:44, 45)।

मसीह की जगह (2:11)

यीशु ने मत्ती 25:40 में अद्‌भुत बात कही कि जब कोई मसीह में किसी भाई की सहायता करता है तो वास्तव में प्रभु की सहायता कर रहा होता है। जब हम किसी दूसरे के साथ परोपकारी कार्य करते हैं तो हमें लगता है, ''मैं उसके लिए मसीह बन गया हूं।'' नहीं, आप गलत हैं। वह व्यक्ति *आप के लिए* मसीह बन गया है! हम उस में अपने भाइयों और बहनों से बढ़े सम्मान के साथ व्यवहार करके जिसमें हम उनके लाभ के लिए व्यक्तिगत बलिदान तक दे देते हैं, अपने आपको मसीह के साथ मिलाते हैं। क्या आप मसीह से मिलना पसन्द करेंगे? क्या आप उसके द्वारा ''भाई'' कहलाना पसन्द करेंगे? तो फिर आज किसी ज़रूरतमंद भाई या बहन को ढूंढ़े और उसकी आवश्यकता को पूरा करें। ऐसा करके आप यीशु की सेवा कर रहे होंगे!

मृत्युः शैतान की मुख्य शक्ति (2:14, 15)

मनुष्यजाति की अन्तिम पीढ़ी को छोड़ अर्थात उन लोगों को जो मसीह की वापसी के समय पृथ्वी पर रह रहे होंगे मृत्यु सुनिश्चित है (इब्रानियों 9:27; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–17)। जो लोग मृत्यु के बारे में गम्भीरता से सोचते हैं पर उनका विश्वास कम है, उन में तर्कहीन भय उत्पन्न हो सकते हैं। मरने का भय स्वाभाविक है, परन्तु अनावश्यक है।

एक जवान के रूप में मृत्यु पर अपनी दादी के लापरवाह व्यवहार से मैं थोड़ा चौंक गया। ग्रबस, आरकैंसा चर्च बिल्डिंग के बिल्कुल पीछे, अपने घर के आंगन के सामने बैठे हुए उसने कहा, ''मैं मरने को बिल्कुल तैयार हूं मैं तो सिर्फ राह देख रही हूं। मुझे इसका कोई डर नहीं।'' उसका विश्वास उस बिन्दु तक पहुंच गया था जहां वह इसे चाहती थी। उसे यह भरोसा था कि उसका चरवाहा ''घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर'' उसके साथ चलेगा। मैं उस समय वह भरोसा चाहता था, परन्तु मेरे पास था नहीं। अब पैंतीस से अधिक सालों के बाद मैं इसके निकट आया हूं-परन्तु पूरी ईमानदारी से, मुझे पक्का नहीं है कि मेरा विश्वास उस दर्जे तक पहुंच गया है या नहीं।

अगस्त 1999 में मुझे तेज़ बुखार होने पर अस्पताल में ले जाया गया और मुझे लगा कि मृत्यु रास्ते में होगी। परन्तु तीन गाड़ियों के कारवां में, जिसमें मेरी पत्नी, मेरे सभी बच्चे और मेरा

दामाद थे, मुझे उस शांति का अहसास हुआ जो मैंने सोचा नहीं था। मैंने विचार किया, ''यदि मेरा समय आ गया है तो मैं परमेश्वर में अपने विश्वास और अपने बच्चों के अपने साथ होने बढ़कर किसी और बात को सोच नहीं सकता था।'' उस अवसर ने और कई साल बाद एक भयंकर मोटर दुर्घटना ने मुझे गम्भीरता से मृत्यु पर सोचने पर मजबूर कर दिया है। यीशु के मेरे विश्वास ने मृत्यु के भय को खत्म करने में सहायता की। जैसे जैसे हम बूढ़े होते हैं हम मृत्यु पर अधिक विचार करते हैं, विशेषकर जब हमारा कोई मित्र इस संसार से चला जाता है। समय और अनुभव मृत्यु के लिए तैयारी करने में हमारी सहायता कर सकते हैं, और उन अनुभवों को परमेश्वर की ओर से आशिषें माना जा सकता है–चाहे वे उस समय कितने भी कठिन लगते हों (रोमियों 8:28)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास और भरोसा हमें वह सारी सांत्वना दे सकता है जिसकी हमें आवश्यकता है।

यीशु हमारे लिए क्या लाया (2:14, 15)

कुछ साल पहले *रीडर'ज़ डाइजेस्ट* ने *पीस चाइल्ड* नामक पुस्तक के एक भाग को दोबारा से छापा।[55] इसमें बताया गया कि किस प्रकार से न्यू जीनिया के जंगलों में एक मिशनरी ने दो लड़ाके कबीलों के बीच सुलह करवाने की कोशिश की। उसने उन में एक प्राचीन प्रथा के बारे में जिसे बहुत पहले भुला दिया गया था, जिसे नाम ''पीस चाइल्ड'' कहा जाता था, जाना। एक कबीले का एक परिवार अपने नवजात शिशु को विरोधी परिवार के कबीले को सौंपता था, बदले में विरोधी परिवार भी ऐसा ही करता था। कबीलों के इस बंधने ने बच्चों और पक्की शांति के द्वारा उन्हें एकता के बंधन में बांधा था। इस परम्परा को जानकर मिशनरी ने यह समझाने के लिए कि यीशु ने क्या किया है इसी उपमा का इस्तेमाल किया। परमेश्वर के पीस चाइल्ड अर्थात शांति के बच्चे के रूप में उसे हमारे पापों के लिए अपने आपको देने और हमें उसके साथ शांतिपूर्ण सम्बन्ध में लाने के लिए, जिससे हमारे पापों ने वैर मोल ले लिया था, संसार में भेजा गया (इफिसियों 2:14)।

डब्ल्यू. बी. वैस्ट, जूनि., ने निम्न उदाहरण साझा किया। एक मां किसी दूसरी मां को तसल्ली देने के लिए आई जिसने हाल ही में अपने बच्चे को खो दिया था। उसने उस दुख को जो परेशान मां अनुभव कर रही थी बड़ी सुन्दरता से व्यक्त किया, परन्तु इससे उसे कोई सांत्वना न मिली। एक और मां आई और बड़े फूहड़ ढंग से बोलने लगी। परन्तु उसने कहा, ''मैं तेरा दुख जानती हूं क्योंकि कब्रिस्तान में एक छोटी सी कब्र है जहां मैंने भी अपने लाडले को रखा है।'' भाई वैस्ट ने टिप्पणी की, ''उसकी सहानुभूति कहीं बढ़कर थी।''

यीशु ने हमें मन की शांति, संतुष्टि और अपने और अपने परमेश्वर के साथ संतुष्टि की सम्भावना हमें दी है। इससे और बड़ी आशीष की कल्पना नहीं की जा सकती। ''केवल यही बात है जो मृत्यु के भय को सफलता से भगाकर और हर परिस्थिति में जहां परमेश्वर उसे रखे, उसमें रहने को तैयार व्यक्ति बना सकती है।''[56]

सासांरिक लोग मृत्यु से भागने का प्रयास करते हैं:

> वे कभी यह नहीं सोचते हैं कि वे इससे बच सकते हैं और जब वह उन पर आ पड़ती है तो वे बेचैन हो जाते हैं। वे इसके विचार को दूर भगाने का प्रयास करते हैं। वे [दूसरे

देशों] में चले जाते हैं; कारोबार में लग जाते हैं; मन को छोटी छोटी बातों से भर लेते हैं; अपने डर को नशीले पदार्थों में डुबो लेते हैं; परन्तु वास्तविकता आने पर यह सब मृत्यु को और भयदायक और डरावना भी बनाता है।[57]

यशायाह ने लिखा है, ''दुष्टों के लिए कुछ शांति नहीं, यहोवा का यही वचन है'' (यशायाह 48:22)।

मसीही व्यक्ति मृत्यु में एक चमकदार पक्ष को देख सकता है: ''जब मनुष्य के रूप में हम अपनी रस्सी के छोर पर हों, जिसमें लगे कि कोई सहारा नहीं रहा, नैतिक हो या शारीरिक तब मसीह यह प्रतिज्ञा लेकर अपने 'बच्चों' के पास आता है कि वह पूरी तरह से उन्हें अपनी सम्पूर्ण महिमा में लाने के योग्य है।'' हमारे समकालीन चाहे जीवन और मृत्यु के दबावों का सामना न कर सकें परन्तु यीशु ''भयानक परीक्षा के हमारे पल में हमारी सहायता करने में सक्षम है। ... वह हमें आत्मिक विनाश से निकालने में सक्षम है और हमें अपने छुड़ाए हुए बच्चों के रूप में अनन्त परमेश्वर के सामने ले जाने में सक्ष्म है।''[58] उसे जानना जो यह सब कर सकता है हमें मृत्यु के भय पर जय पाने में सहायता करता है।

''सहायता कर सकता है'' (2:18)

''सहायता'' के लिए KJV में शब्द ''आवश्यकता के समय दी गई सहायता'' है। इसका अर्थ ''बच्चे की चीख सुनकर भागना'' हो सकता है।[59] एक प्रेमी माता-पिता की तरह यीशु परमेश्वर के बच्चों को जब भी आवश्यकता होती है, सहायता ले आता है। हो सकता है कि यह बिल्कुल उसी समय न आए जब हम इसे चाहते हों या जब हमें लगता हो कि हमें मिलनी चाहिए, परन्तु यह सहायता आती है, आमतौर पर इस प्रकार से जैसे हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हाल ही में मैंने फिर से एक स्पष्ट उदाहरण के रूप में देखा है कि हमारी बेटी अपने नवजात जुड़वां बच्चों की सहायता के लिए भागती है, जब कि उनमें से केवल एक रोने लगता है। (बहुत बड़े काम में अपनी मां की सहायता पाने के लिए) उसके हमारे पास आते रहने के दौरान मैंने अपने आपको उन वर्षों से अधिक जब मैं अपने बच्चों की देखभाल करता था, ''करुणामय'' देखा है।

यीशु ऐसा ही करता है। वह हमारी सहायता करता है क्योंकि उसे मालूम है कि शैतान द्वारा परखे जाने का क्या अर्थ था, जिसने उसे क्रूस पर जाने से रोक लिया होता यदि वह शैतान की परीक्षाओं के आगे हार मान जाता (मत्ती 4:8, 9)। उसने पतरस को शैतान कहकर उसी आत्मा में गिरने के लिए डांटा था (मत्ती 16:21-23) और अपने चेलों से प्रार्थना करने को कहा था कि वे परीक्षा में न पड़ें, क्योंकि उसे मालूम था कि वह परखा जाने वाला है (लूका 22:39-46)। वह पिता के सामने हमारे लिए विनती करता है ताकि हम शैतान की परीक्षाओं से हार कर नाश न हो जाएं (लूका 22:31, 32; इब्रानियों 7:25)।

टिप्पणियां

[1]एफ. एफ. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 27. [2]मारी और नुज़ी के कोड पुरखाओं के काल के निकट के हैं और पुराने नियम की रस्मों पर प्रकाश डालने में सहायता करते हैं। [3]जेम्स मॉफिट, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (न्यू यॉर्कः चार्ल्स स्क्रिबनर'स सन्स, 1924; रिप्रिंट, एडिनबर्गः

टी. एंड टी. क्लार्क, 1952), 18. [4]यीशु, फिलो और इब्रानियों की शिक्षा में इस ढंग के कई उदाहरण नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 81 में दिए गए हैं। [5]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 76. [6]उन दानों की गणना के लिए देखें 1 कुरिन्थियों 12:4-11, 28-30. [7]जेम्स डी. बेल्स, *स्टडीज़ इन हिब्रूज़* (श्रेवपोर्ट, लुइसियाना: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1972), 29. [8]फिलो *ऑन द अनचेंजेबलनेस ऑफ गॉड* 74; *कंसर्निंग नोआह'स वर्क ऐज़ ए प्लांटर* 90; *ऑन ड्रंकननेस* 61. [9]ब्रूस, 35. [10]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ हिब्रूज़* (सरसी आरकैंसा: बॉय द ऑथर, 1980), 37.

[11]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंटीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 99. [12]मूल शब्द संज्ञा शब्द *episkopos*, जिसका अर्थ जो ''रखवाली करता'' या ''देखभाल करता'' है, का सजातीय शब्द *episkeptomai* है। [13]मिलिगन, 99. [14]वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे, *बी कॉन्फिडेंट: ऐन एक्सपोज़िटरी स्टडी ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रू* (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स, 1982), 28. [15]*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन, एंड जी. सी. डी. हाउले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986), 1509 में गेरल्ड एफ़. हाअर्थॉर्न, ''हिब्रू।'' [16]वियर्सबे, 28. [17]हाअर्थॉर्न, 1509. [18]कैल्विनवाद में पांच मूल नियम बताए जाते हैं, जिन्हें आम तौर पर परिवर्णी शब्द कहा जाता है, ''TULIP'': T = टोटल डिप्रेविटी अर्थात पूर्ण दुष्टता, U = अनकंडिश्नल इलैक्शन यानी बिना शर्त चयन, L = लिमिटड अटोनमेंट यानी सीमित प्रायश्चित, I = इरिसस्टिबल ग्रेस यानी पक्का अनुग्रह, और P = परज़वैरैंस ऑफ द सेंट्स यानी संतों का तप। [19]ब्रूस, 43. [20]वियर्सबे, 29.

[21]ब्रूस, 43. [22]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एण्ड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 28, एन. 53. [23]*Teleioō* शब्द के रूपों का इस्तेमाल इब्रानियों की पुस्तक में चौदह बार हुआ है। इस शब्द की पुस्तक का इस्तेमाल चाहे गए लक्ष्य या ध्यान में परिणाम के लिए किया जा सकता है, या इसका अर्थ ''सम्पूर्ण,'' ''पक्का'' या ''पूर्ण विकसित'' हो सकता है। यह कभी भी पाप रहित सिद्धता का संकेत नहीं देता। (रीस, 29, एन. 54.) [24]इसका अर्थ यह नहीं है कि दुख ने प्रभु यीशु मसीह को नैतिक दोषों से ठीक कर दिया। यह असम्भव था, क्योंकि वह पाप रहित था। (थॉमस, हेविट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960], 70)। [25]काफिर देवताओं को ''मनाना'' आवश्यक था परन्तु हमारे परमेश्वर को नहीं। वह मनुष्यजाति के लिए अपने प्रेम के कारण हम से नाराज नहीं है। पुराने नियम के युग में पापों को ''नज़रअन्दाज़ करने'' में परमेश्वर का न्याय योग्य कीमत के द्वारा सही ठहराया जाना था। काफिर जगत में रोमियों 3:23-26 के थीम से मेल खाती कोई बात नहीं है। [26]''पिता,'' ''परिवार'' या ''कुल'' शब्द अनुवादकों द्वारा दिया गया है क्योंकि मूल धर्मशास्त्र में यहां ऐसा कोई शब्द नहीं है। [27]ब्रूस, 45. [28]भजन संहिता 22:18, उसके कपड़ों के बांटे जाने के सम्बन्ध में, स्पष्ट किया गया था जैसे मत्ती 27:35 में पूरा हुआ। [29]ह्यूजस, 108. [30]देखें 1 पतरस 2:8; 1 कुरिन्थियों 1:18, 23.

[31]हाअर्थॉर्न, 1510. [32]इन उद्धरणों का दोहरा अर्थ हो सकता होगा जिसमें मसीहा के लिए कई विचार लागू हाते हैं। उदाहरण के लिए यशायाह 7:14 और मत्ती 1:22, 23 में देखें ''इम्मानुएल।'' यशायाह के समय में जन्म लेने वाले बच्चे को इम्मानुएल कहा जा सकता होगा जबकि भविष्यद्वाणी अभी मसीहा में अपने बड़े अर्थ में पूरी होनी थी, जिसे वास्तव में यह नाम दिया गया था। (इसकी चर्चा ब्रूस, 46-47 में की गई है; रीस, 31, एन. 65.) [33]ब्रूस, 46. ब्रूस का हवाला सी. एच. डॉड, *अकॉर्डिंग टू द स्क्रिप्चर्स: द सब-स्क्रिप्चर ऑफ़ न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर'स सन्स, 1953), 126-38 के लिए है। [34]बूक फॉस वैस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐसेस* (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 52. [35]हाअर्थॉर्न, 1510. [36]ह्यूजस, 114 में उद्धृत। [37]वही, 115. [38]आल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदन: ब्लेकी एंड सन्स, 1884-85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1985), 72. [39]*मिद्राश टन्चुमा। द मिद्राश* पवित्र शास्त्र के भागों के यहूदी लोगों का एक संग्रह है। रब्बियों की इन टीकाओं में पवित्र शास्त्र के ऊपर से गुप्त अर्थ निकालने का दावा किया जाता है। [40]यह कथन यूरीपाइज्ड के एक अज्ञात नाटक के एक खण्ड से लिया गया है।

[41]ह्यूजस, 119. [42]ह्यूज मोंटेफियोर, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* हार्पर'स न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (न्यू

यॉर्क: हार्पर एंड रो, 1964), 66. [43]जेम्स, टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़स गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 65. [44]ह्यूजस, 122. [45]यह संकेत देते हुए कि यीशु मसीही व्यक्ति के पाप शुद्ध करता रहता है "प्रायश्चित" वर्तमान काल में है (देखें 1 यूहन्ना 1:7.) यीशु का लहू पापों को ढांप लेता है जब हम गलती से पाप करते हैं और निश्चय ही जब हमें पता होता है और हम सच्चे दिल से मान लेते हैं कि हम से पाप हुआ है (1 यूहन्ना 1:8-10)। [46]डेल ह्यूलेट, मिशिगन क्रिश्चियन कॉलेज में दिया गया लैक्चर (अब रोचेस्टर कॉलेज), 12 मार्च 1966. [47]वियर्सबे, 31. [48]लाइटफुट, 80. [49]ह्यूजस, 111. [50]ड्रेपर, 60.

[51]अय्यूब के मामले पर विचार करें जो परमेश्वर के रोकने वाले वचन को छोड़ मर भी सकता था (अय्यूब 1:6-12)। [52]वियर्सबे, 36. [53]जोसेफस एडिसन एलेक्जेंडर, "द डूमड मैन," *मास्टरपीसस ऑफ रिलिजियस वर्स,* संपा. जेम्स डाल्टन मौरिसन (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1948), 312. [54]फ्रेड गुटेर्ल, "नाओ, दैट'स ए बैड सनबर्न!" *न्यूज़वीक,* 17 जून 2002, 48. [55]डॉन रिचर्डसन, *पीस चाइल्ड* (ग्लेंडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, 1974)। [56]बार्नस, 71. [57]वही, 72. [58]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 73. [59]वियर्सबे, 31.